मुद्रक और प्रकाशक
जीवणजी डाह्याभाओी देसाओी
नवजीवन मुद्रणालय, अहमदाबाद – ९

प्रथम आवृत्ति, प्रति २०००

प्रकाशकका निवेदन

संसारके सारे भागोंके लोग गांधीजीके जीवन और विचारधारामें, खासकर जनवरी १९४८ में अुनके निर्वाणके बादसे, दिनोंदिन ज्यादा दिलचस्पी दिखा रहे हैं। वे गांधीवादी जीवन-पद्धतिके बारेमें ज्यादा-ज्यादा जानना चाहते हैं, जो बहुतसे लोगोंके विचारसे दुनियाकी आजकी संकटपूर्ण स्थितिसे — जब कि वायुमंडलमें तीसरे विश्वयुद्धके बादल छा रहे हैं — बच निकलनेका अेकमात्र मार्ग है। जिसे सर्वोदय कहा जाता है, वह गांधीवादी जीवन-पद्धतिका केवल दूसरा नाम है। सच कहा जाय तो सर्वोदय अुस समयसे गांधीजीके तत्त्वज्ञानका मूलभूत विचार रहा है, जब अुन्होंने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'हिन्द स्वराज' लिखी थी। रस्किन अपनी पुस्तक 'अन्टु दिस लास्ट'के द्वारा जो कुछ कहना चाहता था, अुसे व्यक्त करनेके लिअे गांधीजीने संस्कृत शब्द 'सर्वोदय' बना लिया था।

गांधीजीके निर्वाणके बाद वर्धा (मध्यप्रदेश, भारत) में सर्वोदय समाजके नामसे अेक भाअीचारेकी स्थापना हुअी। सर्वोदय समाजके सिद्धांतों और कार्यक्रमके बारेमें पूछताछ करनेवालोंको सन्तुष्ट करनेके लिअे यह छोटीसी पुस्तिका प्रकाशित करना आवश्यक मालूम हुआ। अिसमें सर्वोदय आदर्शके मूलभूत सिद्धांतोंके बारेमें कुछ लेख गांधीजीके साहित्यमें से और बाकीके अुनके निकटके साथियों और सहयोगियों द्वारा लिखे संग्रह किये गये हैं।

अिस पुस्तिकामें सर्वोदयके बारेमें गांधीजीके लिखे हुअे लेखोंका विस्तृत संकलन करनेका प्रयत्न नहीं है। भविष्यमें हम अैसा संग्रह प्रकाशित करनेकी आशा रखते हैं।

बहुत थोड़े समयमें अिस पुस्तिकाके लिअे जरूरी सामग्री अिकट्ठी करनेमें श्री श्रीमन्नारायण अग्रवालने जो कष्ट लिया, अुसके लिअे हम अुनके बहुत आभारी हैं। आशा है यह पुस्तिका अुन सब लोगोंके लिअे सहायक सिद्ध होगी, जो सर्वोदय समाज आन्दोलनके बारेमें आवश्यक जानकारी प्राप्त करना चाहते हैं।

अनुक्रमणिका

सर्वोदयका सिद्धांत

१

सर्वोदय

विद्यार्थी जीवनमें पाठ्य-पुस्तकोंके अलावा मेरा वाचन नहींके बराबर समझना चाहिये। और कर्मभूमिमें प्रवेश करनेके बाद तो समय ही बहुत कम रहता है। अिस कारण आज तक भी मेरा पुस्तक-ज्ञान बहुत थोड़ा है। मैं मानता हूं कि अिस अनायासके या जबरदस्तीके संयमसे मुझे कुछ भी नुकसान नहीं पहुंचा है। पर, हां, यह कह सकता हूं कि जो कुछ थोड़ी पुस्तकें मैंने पढ़ी हैं, अुन्हें ठीक तौर पर हजम करनेकी कोशिश अलबत्ता मैंने की है। और मेरे जीवनमें यदि किसी पुस्तकने तत्काल महत्त्वपूर्ण रचनात्मक परिवर्तन कर डाला है, तो वह रस्किनकी 'अन्टु धिस लास्ट' पुस्तक ही है। बादमें मैंने अिसका गुजरातीमें अनुवाद किया था और वह 'सर्वोदय' के नामसे प्रकाशित भी हुआ है।

मेरा यह विश्वास है कि जो चीज मेरे अन्तरतममें बसी हुअी थी, अुसका स्पष्ट प्रतिबिंब मैंने रस्किनके अिस ग्रन्थरत्नमें देखा और अिस कारण अुसने मुझ पर अपना साम्राज्य जमा लिया और अपने विचारोंके अनुसार मुझसे आचरण करवाया। हमारी अंतस्थ सुप्त भावनाओंको जाग्रत करनेका सामर्थ्य जिसमें होता है, वह कवि है। सब कवियोंका प्रभाव सब पर अेकसा नहीं होता। क्योंकि सब लोगोंमें सभी अच्छी भावनायें अेक मात्रामें नहीं होतीं।

'सर्वोदय' के सिद्धान्तको मैं अिस प्रकार समझा हूं:

१. सबके भलेमें अपना भला है।

२. वकील और नाअी दोनोंके कामकी कीमत अेकसी होनी चाहिये, क्योंकि आजीविकाका हक दोनोंको अेकसा है।

३. सादा, मजदूरका और किसानका, जीवन ही सच्चा जीवन है।

पहली बात तो मैं जानता था। दूसरीका मुझे आभास हुआ करता था। पर तीसरी तो मेरे विचारक्षेत्रमें आओी तक न थी। पहली बातमें पिछली दोनों बातें समाविष्ट हैं, यह बात 'सर्वोदय' से मुझे सूर्य-प्रकाशकी तरह स्पष्ट दिखाओी देने लगी। सुबह होते ही मैं अुसके अनुसार अपने जीवनको बनानेकी चिन्तामें लगा।

('आत्मकथा', भाग ४, अध्याय १८) **मो० क० गांधी**

२

सर्वभूतहिताय

बात तो यह है कि अहिंसाका पुजारी अुपयोगिता-वाद (बड़ीसे बड़ी संख्याका ज्यादासे ज्यादा हित)का समर्थन नहीं कर सकता। वह तो 'सर्वभूतहिताय' यानी सबके अधिकतम लाभके लिअे ही प्रयत्न करेगा और अिस आदर्शकी प्राप्तिमें मर जायगा। अिस प्रकार वह अिसलिअे मरना चाहेगा, जिससे दूसरे जी सकें। दूसरोंके साथ-साथ वह अपनी सेवा भी आप मरकर करेगा। सबके अधिकतम सुखके अन्दर अधिकांशका अधिकतम सुख भी मिला हुआ है। और अिसलिअे अहिंसावादी और अुपयोगितावादी अपने रास्ते पर कओी बार मिलेंगे, किन्तु अन्तमें अैसा अवसर भी आयेगा, जब अुन्हें अलग-अलग रास्ते पकड़ने होंगे और किसी-किसी दिशामें अेक-दूसरेका विरोध भी करना होगा। अयुक्तियुक्त न बननेके लिअे अुपयोगितावादी अपनेको कभी बलि नहीं कर सकता। अहिंसावादी हमेशा मिट जानेको तैयार रहेगा।

(हिन्दी नवजीवन, ९-१२-'२६) **मो० क० गांधी**

३

जैसे साधन वैसा साध्य

वे कहते हैं: "साधन आखिर साधन है।" मैं कहूंगा: "साधन ही अन्तमें सब कुछ है।" जैसे हमारे साधन होंगे, वैसा ही साध्य भी होगा। साधनों और साध्यके बीचमें कोओी अलग करनेवाली दीवाल नहीं है। बेशक, ओीश्वरने हमें साधनों पर नियंत्रण करनेकी शक्ति (वह भी बहुत सीमित) दी है, परन्तु साध्य पर बिल्कुल नहीं। साधनोंके ठीक अनुपातमें ही हमारे ध्येय या साध्यकी सिद्धि होगी। अिस विधानमें अपवादकी कोओी गुंजाअिश नहीं है।

(यंग अिडिया, १७-७-'२४)

* * *

साधन बीज है और साध्य पेड़। यानी जितना सम्बन्ध बीज और पेड़के बीच है, अुतना ही साधन और साध्यके बीच है।

(हिन्द स्वराज, अध्याय १६)

* * *

यद्यपि आपने ध्येयको स्पष्ट करनेकी जरूरत पर जोर दिया है, फिर भी अेक बार अुसे निश्चित कर लेनेके बाद मैंने कभी अुसके दोहरानेको महत्त्व नहीं दिया। यदि हम किसी ध्येयको प्राप्त करनेके साधन नहीं जानते या अुनका अुपयोग नहीं करते, तो अुसकी स्पष्टसे स्पष्ट परिभाषा और समझ भी हमें अुसके पास तक नहीं पहुंचा सकती। अिसलिअे मैंने मुख्य चिन्ता साधनोंको सुरक्षित रखनेकी और अुनके प्रगतिशील अुपयोगकी ही रखी है। मैं जानता हूं कि अगर हम साधनोंकी संभाल कर सकें, तो ध्येयकी सिद्धि निश्चित है। मैं यह भी मानता हूं कि हमारे साधन जितने शुद्ध होंगे, ठीक अुसी अनुपातमें ध्येयकी तरफ हमारी प्रगति होगी।

यह तरीका लम्बा, बहुत ज्यादा लम्बा मालूम हो सकता है, लेकिन मेरा पक्का विश्वास है कि वह सबसे छोटा है।

(अमृतबाजार पत्रिका, १७-९-'३३) **मो० क० गांधी**

४

सच्ची सभ्यता क्या है?

सभ्यता आचरणका वह तरीका है, जिससे मनुष्य अपना फर्ज अदा करता है। फर्ज अदा करना यानी नीतिका पालन करना। और नीतिका पालन करनेका अर्थ है अपने मन और अिन्द्रियोंको वशमें रखना। अैसा करते हुअे हम अपने आपको पहचानते हैं। यही सभ्यता है। अिससे विरुद्ध आचरण असभ्यता है।

बहुतसे अंग्रेज लेखक लिख गये हैं कि अूपरकी व्याख्याके अनुसार हिन्दुस्तानको कुछ भी नहीं सीखना है। यह बात बिलकुल ठीक है। हम देखते हैं कि मनुष्यकी वृत्तियां चंचल हैं। अुसका मन व्यर्थ अिधर-अुधर भटकता फिरता है। अुसके शरीरको हम जितना ज्यादा देते ह, अुतना वह ज्यादा मांगता है। और ज्यादा लेकर भी वह सुखी नहीं होता। हम जितने ज्यादा भोग भोगते हैं, अुतनी ज्यादा हमारी भोगकी अिच्छा बढ़ती जाती है। अिसलिअे हमारे पूर्वजोंने अुसकी मर्यादा बांध दी। अुन्होंने बहुत विचार करके देख लिया कि सुख-दु:ख मनके कारण हैं। धनवान धनके कारण सुखी नहीं है, न गरीब गरीबीके कारण दु:खी है। धनी दु:खी देखा जाता है। गरीब सुखी देखा जाता है। करोड़ों लोग तो हमेशा गरीब ही रहनेवाले हैं। यह देखकर हमारे पूर्वजोंने हमसे भोगकी वासना छुड़वाअी। हजारों बरस पहले जो हल था, अुसीसे हमने अपना काम चलाया; हजारों बरस पहले हमारे जैसे झोंपड़े थे, अुन्हींको हमने कायम रखा। हजारों बरस पहले जैसी हमारी शिक्षा थी, वही चलती

आओ। हमने नाशकारी होड़की पद्धतिको अपने यहां स्थान नहीं दिया। सब अपना-अपना धन्धा करते रहे। अुनमें अुन्होंने दस्तूरके मुताबिक दाम लिये। हमें यंत्रोंका आविष्कार करना नहीं आता था, अैसी बात नहीं। लेकिन हमारे पूर्वजोंने देखा कि यंत्रों वगैराकी झंझटमें लोग फंसेंगे, तो गुलाम ही बनेंगे और अपनी नैतिकता छोड़ देंगे। अुन्होंने विचार-पूर्वक कहा कि हम अपने हाथ-पैरोंकी मददसे जो कुछ कर सकें, वही हमें करना चाहिये। हाथ-पैरोंका अुपयोग करनेमें ही सच्चा सुख है, अुसीमें तन्दुरुस्ती है।

अुन्होंने सोचा कि बड़े शहरोंकी स्थापना करना बेकारकी मुसीबत मोल लेना है। अुनमें लोग सुखी नहीं होंगे। अुनमें चोर-डाकुओंके गिरोह पैदा होंगे और व्यभिचार व अनेक तरहकी बुराअियां फैलेंगी। गरीब लोग धनियों द्वारा लूटे और चूसे जायंगे। अिसलिअे अुन्होंने छोटे-छोटे गांवोंसे ही सन्तोष माना।

अुन्होंने देखा कि राजाओं और अुनकी तलवारोंसे नीतिबल ज्यादा बलवान है। अिसलिअे अुन्होंने राजाओंको नीतिमान पुरुषों — ऋषि-मुनियों और साधु-सन्तों — के बनिस्बत नीचा स्थान दिया।

जिस राष्ट्रका अैसा विधान है, वह दूसरोंको सिखाने लायक है, दूसरोंसे सीखने लायक नहीं।

अिस राष्ट्रमें अदालतें थीं, वकील थे, वैद्य थे। लेकिन वे सब नियमोंके बन्धनमें थे। सब जानते थे कि ये धन्धे कोअी बड़े नहीं थे। अिसके अलावा वकील, डॉक्टर, वैद्य वगैरा लोगोंको लूटते नहीं थे। वे तो लोगोंके आश्रित थे। वे लोगोंके मालिक बनकर नहीं रहते थे। अिन्साफ ठीक-ठीक होता था। अदालतोंमें न जानेका लोगोंका सामान्य नियम था। लोगोंको अदालतोंका मोह लगानेवाले स्वार्थी मनुष्य नहीं थे। अितनी बुराअी भी राजधानियोंमें और अुनके आसपास ही दिखाअी देती थी। आम लोग तो स्वतंत्र रहकर अपना खेतीका धन्धा करते थे। वे सच्चे स्वराज्यका अुपभोग करते थे।

और जहां-जहां यह निकम्मी आधुनिक सभ्यता नहीं पहुंची है, वहां हिन्दुस्तान पहले जैसा ही आज भी है। वहांके लोगोंके सामने आप नये ढोंगोंकी बात करेंगे, तो वे अिनका मजाक अुड़ायेंगे। अुन पर न तो अंग्रेज राज्य करते हैं, न आप कभी कर सकेंगे।

जिन लोगोंके नाम पर हम बात करते हैं, अुन्हें न तो हम जानते हैं, न वे हमें जानते हैं। आपको और आपके जैसे दूसरे देशभक्तोंको मेरी सलाह है कि आप देशके अैसे भागोंमें — जिन्हें रेलवेने अभी तक बिगाड़ा नहीं है — जाकर छः महीने तक रहें और बादमें देशभक्त बनें और स्वराज्यकी बात करें।

(हिन्द स्वराज, अध्याय १३) **मो० क० गांधी**

९

'कायिक श्रम'

कायिक श्रमके मनुष्यमात्रके लिअे अनिवार्य होनेकी बात पहले-पहल टाल्स्टायके अेक निबन्धसे मेरे गले अुतरी। अितने स्पष्ट रूपसे अिस बातको जाननेके पहले, रस्किनका 'अन्टु दिस लास्ट' पढ़नेके बाद फौरन ही अुस पर मैं अमल करने लगा था। कायिक श्रम अंग्रेजी शब्द 'ब्रेड लेबर' का अनुवाद है। 'ब्रेड लेबर' का शब्दशः अनुवाद है 'रोटी (-के लिअे) श्रम'। रोटीके लिअे हर आदमीका मजदूरी करना, हाथ-पैर हिलाना औश्वरीय नियम है। यह मूल खोज टाल्स्टायकी नहीं, पर अुसकी अपेक्षा विशेष अपरिचित रूसी लेखक बुनोंहकी है। टाल्स्टायने अिसे प्रसिद्धि दी और अपनाया। अिसकी झलक मेरी आंखें भगवद्गीताके तीसरे अध्यायमें पा रही हैं। यज्ञ किये बिना खानेवाला चोरीका अन्न खाता है, यह कठिन शाप अयज्ञके लिअे है। यहां यज्ञका अर्थ कायिक श्रम या रोटी-श्रम ही शोभा देता है और मेरे मतानुसार

निकलता भी है। जो भी हो, हमारे अिस व्रतकी यह अुत्पत्ति है। बुद्धि भी अिस वस्तुकी ओर हमें ले जाती है। मजदूरी न करनेवालेको खानेका क्या अधिकार हो सकता है? बाअिबिल कहती है, "अपनी रोटी अपना पसीना बहाकर कमाना और खाना।" करोड़पति भी यदि अपने पलंग पर पड़ा रहे और मुंहमें किसीके खाना डाल देने पर खाय, तो बहुत दिनों तक न खा सकेगा। अुसमें अुसके लिअे आनन्द भी न रह जायगा। अिसलिअे वह व्यायामादि करके भूख अुत्पन्न करता है और खाता तो है अपने ही हाथ-मुंह हिलाकर। तो फिर यह प्रश्न अपने आप अुठता है कि यदि अिस तरह किसी न किसी रूपमें राजा-रंक सभीको अंग-संचालन करना ही पड़ता है, तो रोटी पैदा करनेकी ही कसरत सब लोग क्यों न करें? किसानसे हवा खाने या कसरत करनेको कोअी नहीं कहता। और संसारके नब्बे फी सदीसे भी अधिक मनुष्योंका निर्वाह खेतीसे होता है। शेष दस प्रतिशत मनुष्य अिनका अनुकरण करें, तो संसारमें कितना सुख, कितनी शान्ति और कितना आरोग्य फैले? यदि खेतीके साथ बुद्धिका मेल हो जाय, तो खेतीके कामकी अनेक कठिनाअियां सहजमें दूर हो जायं। अिसके सिवाय यदि कायिक श्रमके अिस निरपवाद नियमको सभी मानने लगें तो अूंच-नीचका भेद दूर हो जाय। अिस समय तो जहां अुच्चताकी गंध भी न थी, वहां भी अर्थात् वर्ण-व्यवस्थामें भी वह घुस गअी है। मालिक-मजदूरका भेद सर्वव्यापक हो गया है और गरीब अमीरसे अीर्ष्या करने लगा है। यदि सब अपनी रोटीके लिअे खुद मेहनत करें, तो अूंच-नीचका भेद दूर हो जाय। और फिर जो धनी वर्ग रह जायगा, वह अपनेको मालिक न मानकर अुस धनका केवल रक्षक या ट्रस्टी मानेगा और अुसका अुपयोग मुख्यतः केवल लोकसेवाके लिअे करेगा। जिसे अहिंसाका पालन करना है, अुसके लिअे तो कायिक श्रम रामबाण रूप हो जाता है। यह श्रम वास्तवमें देखा जाय तो खेती ही है। पर आजकी जो स्थिति है, अुसमें सब अुसे नहीं कर सकते। अिस-लिअे खेतीका आदर्श ध्यानमें रखकर आदमी अेवजमें दूसरा श्रम जैसे

कताअी, बुनाअी, बढ़अीगिरी, लुहारी अित्यादि कर सकता है। सबको अपना-अपना भंगी तो होना ही चाहिये। जो खाता है अुसे मलत्याग तो करना ही पड़ता है। मलत्याग करनेवालेका ही अपने मलको गाड़ना सबसे अच्छी बात है। यह न हो सके तो समस्त परिवार मिलकर अपना कर्तव्य पालन करे। मुझे तो वर्षोंसे अैसा मालूम होता रहा है कि जहां भंगीका अलग धन्धा माना गया है, वहां कोअी महादोष घुस गया है। अिसका अितिहास हमारे पास नहीं है कि अिस आवश्यक आरोग्य-रक्षक कार्यको किसने पहले नीचातिनीच ठहराया। ठहरानेवालेने हम पर अुपकार तो नहीं ही किया। हम सभी भंगी हैं, यह भावना हमारे दिलमें बचपनसे दृढ़ हो जानी चाहिये और अिसे करनेका सहजसे सहज अुपाय यह है कि जो समझे हों वे कायिक श्रमका आरंभ पाखाना साफ करनेसे करें। जो ज्ञानपूर्वक अैसा करेगा, वह अुसी क्षणसे धर्मको भिन्न और सच्चे रूपमें समझने लगेगा। बालक, वृद्ध और रोगसे अपंग बने हुअे यदि परिश्रम न करें, तो अुसे कोअी अपवाद न माने। बालकका समावेश मातामें हो जाता है। यदि प्राकृतिक नियम भंग न हो, तो बूढ़े अपंग न होंगे और रोगके होनेकी तो बात ही क्या है?

(मंगलप्रभात, प्रकरण ९) **मो० क० गांधी**

६

आर्थिक समानता

आर्थिक समानता अहिंसापूर्ण स्वराज्यकी असल चाबी है। आर्थिक समानताके लिअे काम करनेका मतलब है, पुंजी और मजूरोंके बीचके झगड़ोंको हमेशाके लिअे मिटा देना। अिसका अर्थ यह होता है कि अेक ओर से जिन मुट्ठी भर पैसेवालोंके हाथमें राष्ट्रकी संपत्तिका बड़ा भाग अिकट्ठा हो गया है, अुनकी सम्पत्तिको कम करना और दूसरी ओरसे जो करोड़ों लोग अधपेट खाते और नंगे रहते हैं, अुनकी सम्पत्तिमें वृद्धि करना। जब तक मुट्ठी भर धनवानों और करोड़ों भूखे रहनेवालोंके बीच बेअिन्तहा अन्तर बना रहेगा, तब तक अहिंसाकी बुनियाद पर चलनेवाली राज्य-व्यवस्था कायम नहीं हो सकती। आजाद हिन्दुस्तानमें देशके बड़ेसे बड़े धनवानोंके हाथमें हुकूमतका जितना हिस्सा रहेगा, अुतना ही गरीबोंके हाथमें भी होगा, और तब नअी दिल्लीके महलों और अुनकी बगलमें बसी हुअी गरीब मजदूर बस्तियोंके टूटे-फूटे झोंपड़ोंके बीच जो दर्दनाक फर्क आज नजर आता है, वह अेक दिनको भी नहीं टिकेगा। अगर धनवान लोग अपने धनको और अुसके कारण मिलनेवाली सत्ताको खुद राजी-खुशीसे छोड़कर और सबके कल्याणके लिअे सबोंके साथ मिलकर बरतनेको तैयार न होंगे, तो यह तय समझिये कि हमारे मुल्कमें हिंसक और खूंख्वार क्रान्ति हुअे बिना न रहेगी। ट्रस्टीशिप या सरपरस्तीके मेरे सिद्धान्तका बहुत मजाक अुड़ाया गया है, फिर भी मैं अुस पर कायम हूं। यह सच है कि अुस तक पहुंचने यानी अुसका पूरा-पूरा अमल करनेका काम कठिन है। क्या अहिंसाकी भी यही हालत नहीं? फिर भी १९२० में हमने यह सीधी चढ़ाअी चढ़नेका निश्चय किया।

(रचनात्मक कार्यक्रम: मुद्दा १३)

* * *

आर्थिक समानता, अर्थात् जगतके सब मनुष्योंके पास अेक समान संपत्तिका होना, यानी सबके पास अितनी संपत्तिका होना कि जिससे वे अपनी कुदरती आवश्यकताअें पूरी कर सकें। कुदरतने ही अेक आदमीका हाजमा अगर नाज़ुक बनाया हो और वह केवल पांच ही तोला अन्न खा सके, और दूसरेको बीस तोला अन्न खानेकी आवश्यकता हो, तो दोनोंको अपनी-अपनी पाचनशक्तिके अनुसार अन्न मिलना चाहिये। सारे समाजकी रचना अिस आदर्शके आधार पर होनी चाहिये। अहिंसक समाजको दूसरा आदर्श नहीं रखना चाहिये। पूर्ण आदर्श तक हम कभी नहीं पहुंच सकते, मगर अुसे नजरमें रखकर हम विधान बनायें और व्यवस्था करें। जिस हद तक हम अिस आदर्शको पहुंच सकेंगे, अुसी हद तक सुख और सन्तोष प्राप्त करेंगे, और अुसी हद तक सामाजिक अहिंसा सिद्ध हुअी कही जा सकेगी।

अब अहिंसाके द्वारा आर्थिक समानता कैसे लाअी जा सकती है, अिसका विचार करें। पहला कदम यह है। जिसने अिस आदर्शको अपनाया हो, वह अपने जीवनमें आवश्यक परिवर्तन करे। हिन्दुस्तानकी गरीब प्रजाके साथ अपनी तुलना करके अपनी आवश्यकताअें कम करे। अपनी धन कमानेकी शक्तिको नियममें रखे। जो धन कमाये, अुसे अीमानदारीसे कमानेका निश्चय करे। सट्टेकी वृत्ति हो, तो अुसका त्याग करे। घर भी अपनी सामान्य आवश्यकता पूरी करने लायक ही रखे, और जीवनको हर तरहसे संयमी बनाये। अपने जीवनमें संभव सुधार कर लेनेके बाद अपने मिलने-जुलनेवालों और अपने पड़ोसियोंमें समानताके आदर्शका प्रचार करे।

आर्थिक समानताकी जड़में धनिकका ट्रस्टीपन निहित है। अिस आदर्शके अनुसार धनिकको अपने पड़ोसीसे अेक कौड़ी भी ज्यादा रखनेका अधिकार नहीं। तब अुसके पास जो ज्यादा है, क्या वह अुससे छीन लिया जाय? अैसा करनेके लिअे हिंसाका आश्रय लेना पड़ेगा। और हिंसाके द्वारा अैसा करना संभव हो, तो भी समाजको अुससे कुछ फायदा

होनेवाला नहीं है। क्योंकि द्रव्य अिकट्ठा करनेकी शक्ति रखनेवाले अेक आदमीकी शक्तिको समाज खो बैठेगा। अिसलिअे अहिंसक मार्ग यह हुआ कि जितनी मान्य हो सके, अुतनी अपनी आवश्यकताअें पूरी करनेके बाद जो पैसा बाकी बचे अुसका वह प्रजाकी ओरसे ट्रस्टी बन जाय। अगर वह प्रामाणिकतासे संरक्षक बनेगा, तो जो पैसा पैदा करेगा अुसका सद्व्यय भी करेगा। जब मनुष्य अपने आपको समाजका सेवक मानेगा, समाजकी खातिर धन कमायेगा, समाजके कल्याणके लिअे अुसे खर्च करेगा, तब अुसकी कमाअीमें शुद्धता आयेगी। अुसके साहसमें भी अहिंसा होगी। अिस प्रकारकी कार्यप्रणालीका आयोजन किया जाय, तो समाजमें बगैर संघर्षके मूक क्रांति पैदा हो सकती है।

किन्तु महा प्रयत्न करने पर भी धनिक संरक्षक न बनें, और भूखों मरते हुअे करोड़ोंको अहिंसाके नामसे और अधिक कुचलते जायं, तब क्या करें? अिस प्रश्नका अुत्तर ढूंढ़नेमें ही अहिंसक कानून-भंग प्राप्त हुआ। कोअी धनवान गरीबोंके सहयोगके बिना धन नहीं कमा सकता। मनुष्यको अपनी हिंसक शक्तिका भान है, क्योंकि वह तो अुसे लाखों वर्षोंसे विरासतमें मिली हुअी है। जब अुसे चार पैरकी जगह दो पैर और दो हाथवाले प्राणीका आकार मिला, तब अुसमें अहिंसक शक्ति भी आअी। हिंसा-शक्तिका तो अुसे मूलसे ही भान था, मगर अहिंसा-शक्तिका भान भी धीरे-धीरे, किन्तु अचूक रीतिसे रोज-रोज बढ़ने लगा। यह भान गरीबोंमें प्रसार पा जाय, तो वे बलवान बनें और आर्थिक असमानताको, जिसके कि वे शिकार बने हुअे हैं, अहिंसक तरीकेसे दूर करना सीख लें।

(हरिजनसेवक, २४-८-'४०) मो० क० गांधी

७

साध्य और साधन

[१७–१०–'४९ को कोलम्बिया (अमेरिका) युनिवर्सिटी द्वारा प्रदान की हुअी 'डॉक्टर आफ लॉज' की आनरेरी डिग्री स्वीकार करते समय पंडित जवाहरलाल नेहरूने जो भाषण दिया था, अुसके महत्त्वपूर्ण अंश नीचे दिये जाते हैं।]

मेरा यह भी खयाल है कि हमारा साध्य और अुसे प्राप्त करनेके लिअे अपनाये गये साधनोंमें बहुत पासका और गहरा सम्बन्ध है। साध्यके सही होने पर भी अगर साधन गलत हों, तो वे साध्यको बिगाड़ देंगे या अुसे गलत दिशामें मोड़ देंगे। अिस तरह साधन और साध्यमें गहरा और अटूट सम्बन्ध है; वे अेक-दूसरेसे अलग नहीं किये जा सकते। वास्तवमें, पुराने जमानेके बहुतसे महापुरुषोंने हमें यह सबक सिखाया है, लेकिन दुर्भाग्यसे वह विरले मौकों पर ही याद रखा जाता है।

मैं अिनमें से कुछ विचार आपके सामने रखनेकी हिम्मत अिसलिअे नहीं कर रहा हूं कि वे बिलकुल नये या मौलिक हैं, बल्कि अिसलिअे कि अुन्होंने मेरे जीवनमें मुझ पर असर डाला है, जो बारी-बारीसे कभी सतत प्रवृत्तियों और संघर्षमें और कभी लादी हुअी फुरसतमें बीता है। मेरे देशके महान नेता महात्मा गांधी, जिनकी प्रेरणा और प्रेमकी छायामें मैं बड़ा हुआ, हमेशा नैतिक मूल्यों पर जोर देते थे और अिस बातकी सावधानी रखनेको कहा करते थे कि साधनोंको साध्यके अधीन कभी न बनाया जाय। हम अुनके योग्य वारिस नहीं हैं, फिर भी यथाशक्ति अुनके अुपदेशों पर चलनेकी कोशिश करते हैं। हालांकि हम अेक हद तक ही अुनके अुपदेशों पर चल सके हैं, फिर भी अुसके बहुत अच्छे नतीजे आये हैं।

अेक बड़े और शक्तिशाली राष्ट्रके साथ अेक पीढ़ीके घोर संघर्षके बाद हमें सफलता मिली और अुस सफलताका सबसे महत्त्वका भाग शायद अुसे पानेका तरीका था, जिसका श्रेय दोनों पार्टियोंको है। अैसे संघर्षके शान्तिपूर्ण हलकी दूसरी मिसाल अितिहासमें शायद ही कहीं मिलेगी, जिसके बाद दोनों देशोंमें मैत्रीपूर्ण और सहयोगी सम्बन्ध कायम हुअे हों। यह देखकर अचरज होता है कि कितनी जल्दी दोनों राष्ट्रोंके बीचकी कड़वाहट और दुर्भावना मिट गअी और अुनकी जगह सहकारने ले ली। और, हम भारतके लोगोंने अपनी मरजीसे अेक आजाद राष्ट्रके नाते यह सहकार चालू रखनेका फैसला किया है।

मैं दूसरे ज्यादा अनुभवी राष्ट्रोंको किसी भी तरहकी सलाह देनेकी धृष्टता नहीं करूंगा। लेकिन क्या आपके विचारके लिअे मैं नम्रतासे यह सुझा सकता हूं कि भारतकी शान्तिमय क्रांतिमें कुछ अैसा सबक रहा है, जो दुनियाके सामने खड़ी हुअी आजकी ज्यादा बड़ी समस्याओं पर लागू किया जा सकता है। अुस क्रांतिने हमें यह प्रत्यक्ष कर दिखाया है कि भौतिक शक्ति अनिवार्य रूपसे मनुष्यके भविष्यका लक्ष्य नहीं होना चाहिये, और यह कि लड़ाअी लड़नेका तरीका और अुसके अन्तका ढंग सबसे बड़ा महत्त्व रखते हैं। पुराना अितिहास हमें बताता है कि भौतिक शक्तिने कितने महत्त्वका काम किया है। लेकिन वह हमें यह भी बताता है कि अैसी कोअी भी शक्ति दुनियाकी नैतिक शक्तियोंकी अुपेक्षा नहीं कर सकती; और अगर वह कभी अैसा करनेकी कोशिश करती है, तो वह अपने लिअे खतरेको ही न्योतती है। आज यह समस्या भयंकर रूपमें हमारे सामने मुंह बाये खड़ी है, क्योंकि भौतिक शक्तिके पास आज जो जबरदस्त हथियार हैं, अुनकी कल्पनासे भी डर मालूम होता है। क्या बीसवीं सदी आदिम कालकी बर्बरतासे अिसी बातमें अपनी भिन्नता सिद्ध करेगी कि अुसके पास मनुष्यकी प्रतिभासे मनुष्यके ही नाशके लिअे आविष्कार किये गये जबरदस्त संहार करनेवाले शस्त्र हैं? अपने गुरुके अुपदेशोंके मुताबिक मेरा यह विश्वास है कि जिस स्थितिका मुकाबला

करने और हमारे सामने खड़ी समस्याको हल करनेका दूसरा रास्ता जरूर है। मैं यह महसूस करता हूं कि जिस राजनीतिज्ञ या मनुष्यको सार्वजनिक काम करने पड़ते हैं, वह हकीकतोंकी अुपेक्षा करके शुद्ध सत्यके आधार पर काम नहीं कर सकता। अुसकी प्रवृत्ति हमेशा सीमित होती है। फिर भी बुनियादी सत्य आखिर सत्य ही रहता है और अुसे हमेशा अपनी दृष्टिमें रखना होता है; और यथासंभव अुसे हमारे कामों पर असर डालना चाहिये। वर्ना हम बुराअीके कुचक्रमें फंस जाते हैं, जब अेक बुरा काम दूसरे बुरे कामको जन्म देता है।

(हरिजनसेवक, १३-११-'४९) **जवाहरलाल नेहरू**

८

सेवाग्राम-सम्मेलन

[ता० १३, १४, १५ मार्च १९४८ को सेवाग्राममें हुअे सम्मेलनके अध्यक्षपदसे श्री राजेन्द्रबाबूने नीचेका भाषण दिया था। अुस सम्मेलनमें सारे देशके अधिकतर बड़े रचनात्मक कार्यकर्ताओंने भाग लिया था। श्री जवाहरलाल नेहरू जैसे कअी बड़े-बड़े राजनैतिक नेता और दूसरे महत्त्वपूर्ण व्यक्ति भी अुसमें अुपस्थित हुअे थे।]

सम्मेलनके सामने दो समस्यायें थीं। गांधीजीने दक्षिण अफ्रीका और हिन्दुस्तानमें लगातार पचास बरस तक काम किया था। वे कुछ असूलों और जीवनके अेक खास तरीकेके समर्थक थे। देशकी आजादीकी लड़ाअीमें अुन्होंने राष्ट्रीय ताकतोंका संगठन किया था। जो लड़ाअी वे लड़े, वह अुस किस्मकी नहीं थी, जिससे दुनिया परिचित है। अुसकी विचित्रता अिसमें थी कि वह अेक बड़ी हुकूमतकी भौतिक ताकतके खिलाफ सत्य और अहिंसाके आधार पर लड़ी गअी थी।

अुनकी शिक्षा किसी रहस्यवादी या सन्तकी शिक्षाकी तरह नहीं थी, जो सिर्फ दुनियासे सारा नाता तोड़ लेनेवाले व्यक्तियोंके लिअे ही होती है, बल्कि ज्यादासे ज्यादा व्यवहारमें लाने लायक थी और अुस पर कोअी भी अपने जीवनमें अमल कर सकता था। जो कुछ अुन्होंने कहा या लिखा है, अुसका बहुतसा हिस्सा सम्हालकर रखा गया है, और अुसे हम और हमारे बाद आनेवाली पीढ़ियां देख सकती हैं। हिन्दुस्तान और दूसरे देशोंमें भी अैसे कअी लोग हैं, जिन्होंने गांधीजीके सिद्धान्तोंके सांचेमें अपना जीवन ढालनेकी कोशिश की है और जो अैसे कअी तरहके कामोंमें लगे हुअे हैं, जो गांधीजीके दृष्टिकोणके अनुसार जीवन और समाजकी तरक्कीके लिअे जरूरी और सहायक समझे जाते हैं। अिसलिअे सम्मेलनके सामने खड़ी होनेवाली समस्याओंमें से पहली यह थी कि अैसी अेक संस्था कायम करना जरूरी और संभव है या नहीं, जो अुनके काम और विचारधाराकी अच्छी तरह सेवा कर सके और अुन्हें चलाये रखे। और अगर अैसी संस्था कायम की जाय, तो अुसका स्वरूप और काम क्या होना चाहिये। दूसरे, गांधीजीने अपने रचनात्मक कामको, अुसके अलग-अलग विषयोंसे सम्बन्ध रखनेवाले कअी स्वरूपोंमें, अमलमें लानेके लिअे बहुतसी संस्थाअें कायम की थीं, जो अपना काम आज भी कर रही हैं। अब सवाल यह है कि किस तरह अिन संस्थाओंको जारी रखा जाय, ताकि वे गांधीजी द्वारा अुठाये गये कामको आगे बढ़ा सकें।

१३ मार्चको सम्मेलनकी कारंवाअी शुरू होनेसे पहले बहुतसे कार्यकर्ता, जो गांधीजीके साथ काम कर चुके थे, मिले और समस्याओंके अलग-अलग स्वरूपों पर अुन्होंने चर्चा की। अुन्होंने प्रोग्राम बनाया और सम्मेलनके सामने पेश करनेके लिअे प्रस्ताव तैयार किये। ये प्रारंभिक बैठकें विचारोंको स्पष्ट करने और काम करनेके लिअे अेक व्यावहारिक प्रोग्राम तय करनेकी दृष्टिसे बहुत अहम थीं। जैसी कि आशा की गअी थी, ये चर्चाअें खुली और सम्पूर्ण थीं और जिन लोगोंने अिन बैठकोंमें भाग लिया, अुन्होंने दूसरोंके विचार करनेके

लिअे अपने दृष्टिकोण अुनके सामने रखे। पहला सवाल यह था कि हम क्या कर सकते हैं, जिससे गांधीजीकी शिक्षाके अध्ययनको बढ़ावा मिले और लोग अपने जीवनमें अुस पर अमल करें। क्या अिसके लिअे अेक संस्थाका होना जरूरी है? अगर है, तो क्या वह अेक अच्छी तरह संगठित और अनुशासनमें काम करनेवाली संस्था हो, जिसके मेम्बर अुसकी सीमाके अन्दर रहकर काम करें, या वह अैसे मर्दों और औरतोंका अेक समाज भर हो, जिनका गांधीजीके अुसूलोंमें विश्वास है और जिन्होंने अपनी समान श्रद्धा और समान आदर्शोंके सिवा दूसरे किसी बन्धनके बगैर अपने जीवनमें अुन पर अमल करनेकी कोशिश की है?

अिसमें कठिनाअियां और खतरे भी हैं, जिनका मुकाबला करने और टालनेकी जरूरत है। अितिहास अैसे सन्तोंके अुदाहरणोंसे भरा पड़ा है, जिनके अनुयायियोंने अुनके मरनेके बाद अुनकी शिक्षाको जड़ मतोंका रूप दे दिया, जिन्हें अुन सारे लोगोंको स्वीकार करना पड़ा, जो अुनका अनुसरण करते थे। होते होते अिन मतोंमें कोअी अर्थ नहीं रह गया और अुन सन्तोंको माननेवाले लोग सिर्फ अूपरी आडम्बरसे सन्तुष्ट हो गये और अुनके अुपदेशोंकी सच्ची भावनाको अुन्होंने भुला दिया।

सम्मेलनके सदस्य चिन्तित थे कि अैसी कोअी बात गांधीजीके बारेमें न होने पाये।

गांधीजीने अपने सार्वजनिक जीवनके कअी वर्षोंमें अपने भाषणों और लेखोंमें सभी विषयोंको समेट लिया था और हमारी मौजूदा जिन्दगीकी अेक भी समस्या अैसी नहीं थी, जिस पर अुन्होंने कुछ कहा न हो। सार्वजनिक जीवनके सवाल ही नहीं, बल्कि व्यक्तिगत जीवनके सवाल भी अुनके सामने लगातार रखे जाते रहे, और अुनका ध्यान खींचते रहे। स्टेटकी बड़ी-बड़ी समस्याओंसे लगाकर जिसे हम गृहस्थ-जीवनकी बारीकसे बारीक बात समझते हैं, अुस पर भी अुन्होंने

अुचित ध्यान दिया। अुदाहरणके लिअे, अुन्होंने बताया है कि रसोअी-घरको किस तरह जमाया जाय और वहां कैसे काम किया जाय, तथा पाखानोंको कैसे साफ रखा जाय। जरा-जरासी बारीकियों तक पहुंचनेमें अुन्हें कभी थकावट नहीं मालूम होती थी, और जिस तरह कोअी चीज अुनके लिअे बहुत बड़ी या बहुत मुश्किल नहीं थी, अुसी तरह कोअी चीज बहुत छोटी या बहुत तुच्छ भी नहीं थी। स्वभावसे अुनका सारा जीवन ही प्रयोगोंकी अेक कड़ी थी और अुन्होंने अपनी 'आत्मकथा'को सही अर्थमें 'सत्यके प्रयोग' नाम दिया था। अैसी हालतोंमें, जैसी कि आशा की जाती है, अुनकी बुद्धि अेक जगह ठहरी रहनेवाली नहीं, बल्कि जीवनके अनुभवके साथ विकास करनेवाली थी। कोअी भी गांधीजीके बारेमें या वे खुद अपने बारेमें यही कह सकते थे कि किसी खास सवाल पर अुन्होंने जो कुछ कहा था, वह कहनेके समयका अुनका सोच-विचारकर कायम किया हुआ मत था। वह जरूरी तौर पर अैसा मत नहीं था, जिसे अुसी विषय पर वे दूसरे समय और दूसरी हालतोंमें भी जाहिर करते। यह चीज अैसी नहीं है, जिसे मामूली तौर पर असंगतता कहा जाता है। यह तो अुस आदमीकी विशेषता है, जिसने समय-समय पर खड़ी होनेवाली समस्याओंको जांचने और अुन पर फैसला देनेके लिअे कोअी सिद्धान्त कायम कर लिये हैं, और जो बुनियादी सिद्धान्तसे अेक अिंच भी अिधर-अुधर न हटकर अलग-अलग समयों पर अलग-अलग मत जाहिर करनेमें डरता नहीं। गांधीजीसे यह बिनती की गअी थी कि वे विस्तृत पाठ्य-पुस्तककी तरह अैसी कोअी चीज लिखें, जिसमें वे यह रूपरेखा दे सकें कि हिन्दुस्तान और दुनियाके सामने खड़ी अनेक धार्मिक, सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक समस्याओंको अमली ढंग पर हल करनेमें अुनके सिद्धान्त कैसे काममें लाये जा सकते हैं। लेकिन अैसा करनेमें अुन्होंने अपनी असमर्थता बताअी और कहा कि मेरे पास सिर्फ बुनियादी सिद्धान्त ही हैं, जिन्हें मैं समय-समय पर खड़ी होनेवाली अमली समस्याओं पर लागू करता हूं। मैं सामान्य सिद्धान्तोंकी

पाठ्य-पुस्तक जैसी कोअी चीज नहीं लिख सकता। कान्फरेन्सके सदस्योंको यह वात ध्यानमें रखनी होगी, और अिस वातकी सावधानी रखनी होगी कि गांधीजीके अवसानके वाद वे अैसा कोअी काम न करें, जिसे गांधीजी अपने जीवनकालमें करनेसे अिनकार करते या टालते। यानी वे अनुदार मतों और नियमोंकी कोअी पाठ्य-पुस्तक नहीं वनायें। लेकिन अिससे ज्यादा यह खयाल भी है कि कोअी संस्था या संघ धीरे-धीरे गिरकर सम्प्रदायका रूप ले लेता है; और अिससे हमें हर कीमत पर वचना होगा।

जैसा कि अूपर कहा गया है, गांधीजी रहस्यवादी नहीं थे, वल्कि वहुत वड़े व्यावहारिक आदमी थे। और अुनका अुपदेश था कि जिन सिद्धान्तोंको वे सत्य और पवित्र मानते थे, अुन्हे अमली रूपमें व्यक्तियोंके और अुस समाजके जीवनसे प्रगट होना चाहिये, जिसकी वे कल्पना किया करते थे। अिसलिअे जो रचनात्मक काम अुन्होंने अपने हाथमें लिया था, वह अुनके सत्य और अहिंसाके वुनियादी सिद्धान्तोंका अमली प्रयोग था। थोड़ा ज्यादा गहरा विश्लेषण अुन्हें समन्वयकी तरफ अेक कदम आगे ले गया और अहिंसा सत्यमें समा गअी। सत्य अुनका अेकमात्र वड़ा सिद्धान्त वन गया, जिस पर वे हमेशा दृढ़तासे डटे रहे। गांधीजीने सिर्फ नैतिक अर्थमें ही सत्यको स्वीकार नहीं किया था, वल्कि सत्य अुनका अीश्वर था, जिसमें अुनका सम्पूर्ण अस्तित्व समाया हुआ था। अिसलिअे सत्यके अिस वुनियादी सिद्धान्तसे अलग रचनात्मक कार्य-क्रम अुनके लिअे कोअी मानी नहीं रखता था, और अुनका विश्वास था कि जव तक वह सत्यकी नींव पर खड़ा होनेवाला समाज कायम करनेमें मदद नहीं करता, तव तक वह सफल नहीं हो सकता। अिसलिअे गांधीजी रचनात्मक कार्यक्रमकी विभिन्न वातोंको सत्यके महान शिखरकी दिशामें ले जाने और वहां तक पहुंचानेवाली सीढ़ियां मानते थे। व्यक्तियों और समाजको अुस महान शिखर तक पहुंचना और अुसे हासिल करना था। जिस तरह अलग-अलग दिशाओंसे आनेवाले लेकिन अुसी विन्दुकी ओर

जाने और पहाड़की चोटी तक पहुंचानेवाले विभिन्न मार्ग होते हैं, अुसी तरह रचनात्मक कार्यक्रमके अलग-अलग विषय भी अेक ही चोटी तक पहुंचानेके साधन माने गये थे। अिसलिअे गांधीजीका मकसद सिर्फ यह नहीं था कि गहरे विचार और अेकाग्रताके फलस्वरूप बौद्धिक नियंत्रण या दार्शनिक सन्तोष पाया जाय। अुनका मकसद तो अैसे कामोंमें सक्रिय भाग लेना था, जो प्रत्यक्ष या परोक्ष रूपसे व्यक्तियों और समाजके जीवनको बनानेवाले हों। अैसा समाज वे अपने रचनात्मक कार्यक्रमके प्रयोग द्वारा कायम करना चाहते थे। अिसलिअे कान्फरेन्सको यह सोचना है कि गांधीजीके सिद्धान्तों पर अच्छेसे अच्छे ढंगसे किस तरह अमल किया जा सकता है।

गांधीजीका बाहरी आदेशों पर बहुत विश्वास नहीं था। मनुष्यके जीवनको नियमित करनेके लिअे वे भीतरी आदेश या सामान्य तौर पर अन्तरात्मा कही जानेवाली शक्तिके आदेश पर ज्यादा निर्भर करते थे। जो लोग गांधीजीकी शिक्षाओंको समझने और अुन पर अमल करनेका दावा करते हैं, वे अगर किसी संस्थाके बाहरी आदेशों पर निर्भर करेंगे, तो शुरूमें ही अेक तरहसे अपने माने हुअे सिद्धांतोंसे अिनकार करेंगे। दूसरी तरफ, अगर अैसे सब लोगोंका, जो गांधीजीके जीवनकालमें अुनके पीछे चलनेकी कोशिश करते थे और जिनके लिअे शरीरधारी गांधीजी ही अेकमात्र बांधनेवाली ताकत थे, कोअी संघ न हो, तो वे गांधीजीके शरीरके आगमें भस्म हो जाने पर किसी तरहकी जोड़नेवाली ताकतके अभावमें विरोधी विचार-धाराओंके शिकार बन जायेंगे। अिसलिअे अिस कान्फरेन्सको बीचका रास्ता लेना पड़ा और अुसने कठोर नियमोंसे न बंधी अेक संस्था कायम करनेका निश्चय किया। अुसमें सब कार्यकर्ताओंको अेक सूत्रमें बांधनेवाली ताकत होगी गांधीजीके अुपदेशोंमें अेकसी श्रद्धा और कम-ज्यादा रूपमें जीवनका अेकसा मार्ग, जिसकी अुन्होंने शिक्षा दी थी और जिसके अनुसार हरअेक सेवक अपने क्षेत्रमें जीनेकी कोशिश करेगा।

बहुतसे सवालोंमें से अेक सवाल, जिस पर थोड़ी बहस हुअी, यह था कि क्या अिस संस्थाके सदस्य रहेंगे? और अगर रहेंगे, तो क्या सदस्यताकी कोअी शर्तें रहेंगी? कोअी अिस संस्थाका मेम्बर कैसे बन सकेगा? अेक मत यह था कि मेम्बरोंकी कोअी फेहरिस्त न रहे, क्योंकि अगर मेम्बरोंका नाम रजिस्टरमें दर्ज किया जायगा, तो किसीको यह तय करना पड़ेगा कि कोअी खास अर्जी करनेवाला आदमी मेम्बर बनने लायक है या नहीं। यह भी तय करना होगा कि कोअी खास मेम्बर अपने किसी कामके कारण संस्थाकी सदस्यतासे अलग करने लायक तो नहीं है। दूसरोंका यह खयाल था कि किसी न किसी तरहकी सदस्यता होनी ही चाहिये, फिर अुसका बोझ कितना ही हलका क्यों न हो। आखिरमें यह तय किया गया कि अैसा कोअी भी व्यक्ति अपनेको अिस संस्थाका मेम्बर मान सकता है, जो गांधीजीकी शिक्षाओं और आदर्शोंमें श्रद्धा रखता है और जिसने अपने जीवनमें आजकी या भविष्यमें कायम की जानेवाली रचनात्मक संस्थाओंके कामों जैसे किसी कामको करके गांधीजीके आदर्शों और शिक्षाओंको ठोस रूप देनेकी कोशिश की है। सर्वोदय समाजकी सदस्यता दूसरे संघों और संस्थाओंकी सदस्यताकी तरह नहीं होगी। अेक अर्थमें वह मेम्बरोंके बीच ढीला सम्बन्ध है और दूसरे अर्थमें वह अिस बात पर जोर देता है कि गांधीजीकी शिक्षाओं पर सिर्फ श्रद्धा ही नहीं रखी जाय, बल्कि जीवनमें अुन पर दृढ़तासे अमल भी किया जाय। अिस बातकी जांच कोअी बाहरी अधिकारी नहीं करेगा। अिसकी जांच तो किसी स्त्री या पुरुषकी अन्तरात्मा ही करेगी। अिसलिअे जो व्यक्ति अपनेको योग्य समझता है, वह सिर्फ अपना नाम और पता अुस आदमीके पास भेज दे, जो रेकार्डमें रखनेके लिअे अुन्हें पानेका अधिकारी होगा। 'मेम्बर' या 'सदस्य' शब्दको जान-बूझकर छोड़कर 'सेवक' या 'कार्यकर्ता' शब्दका अिस्तेमाल किया गया है।

अिसी तरह संस्थाके नाममें भी 'संघ' शब्द, जिसके साथ किसी न किसी तरहके दबावकी भावना जुड़ी होती है, छोड़कर 'समाज'

शब्दका अुपयोग किया गया, जिसका मतलब किसी संघके बजाय भाओी-चारेका ज्यादा होता है। 'समाज' नाम पर भी बहस हुअी और आखिरमें 'सर्वोदय समाज' नाम ही सबसे अच्छा समझा गया। यह नाम अिसलिअे नहीं चुना गया कि खुद गांधीजीने अपनी शिक्षाके ठोस नतीजेको जाहिर करनेके लिअे 'सर्वोदय' शब्दका अिस्तेमाल किया था, बल्कि अिसलिअे भी अुसे चुना गया कि वह सेवकोंके सामने हमेशा गांधीजीकी शिक्षाओंका अमली पहलू रखनेका सबसे अच्छा साधन साबित होगा। अिस तरह सर्वोदय समाजकी स्थापना, जैसा कि ठहरावमें कहा गया है, सत्य और अहिंसा पर खड़े होनेवाले समाजकी रचनाके लिअे की गअी है, जिसमें जात-पांत या धर्मका कोअी फरक नहीं होगा, किसीके शोषणकी थोड़ी भी गुंजाअिश नहीं होगी, और व्यक्तियों और समाजके विकासके लिअे पूरा मौका मिलेगा। ठहरावमें अिस मकसदको हासिल करनेके विभिन्न साधन बताये गये हैं, जो रचनात्मक कार्यक्रमके विभिन्न पहलू हैं। ठहरावमें यह बताया गया है कि जो गांधीजीके सिद्धांतोंको दृढ़तासे मानता है और जीवनमें अुन पर अमल करता है, वह सर्वोदय समाजका मेम्बर हो सकता है।

मेम्बरोंको आपसमें सम्पर्क कायम करनेका मौका देनेके लिअे यह निर्णय किया गया कि किसी तय की हुअी जगह पर हर साल ३० जनवरीको मेला हुआ करेगा। यह मेला आजकलकी कान्फरेन्सों या कांग्रेसोंसे बिल्कुल अलग होगा, जिनके लिअे स्वागत-समितियोंको प्रतिनिधियोंके रहने-खानेके लिअे बड़े पैमाने पर खर्चीला अिन्तजाम करना पड़ता है। यह मेला निश्चित तारीखको अेक निश्चित जगह पर होगा; और जो अुसमें आयेंगे, अुन्हें अपना अिन्तजाम अुसी तरह खुद करना होगा, जिस तरह किसी मेलेमें जानेवाले लोग करते हैं। अिस मेलेमें आनेवाले लोगोंके लिअे दूसरे लोग सिर्फ सफाअी वगैराका अिन्तजाम ही कर सकते हैं, जो व्यक्तियोंसे नहीं हो सकता। सेवक अिस मेलेमें अेक-दूसरेसे मिलेंगे, विचारोंका लेन-देन करेंगे, अेक-दूसरेके अनुभव जानेंगे

और ताजी प्रेरणा लेकर अपनी-अपनी कामकी जगहों पर लौट जायेंगे। संभव है, पत्र भी प्रकाशित किये जायें, जिनसे मेम्बरोंको अेक-दूसरेके विचारों और अनुभवोंको जाननेका फायदा मिले।

प्रेसिडेण्ट और श्री किशोरलाल मशरूवालाको यह अधिकार दिया गया कि वे अिस ठहरावको अमलमें लानेके लिअे अेक कमेटी बनावें। कान्फरेन्समें यह बात खास तौर पर कही गअी कि अिस कमेटीका अैसा रूप नहीं होना चाहिये, जो गांधीजीकी शिक्षाओंका अधिकृत अर्थ बतावे या अुस कोर्टका काम करे जहां गांधीजीकी शिक्षाओंके अर्थ पर खड़े होनेवाले झगड़ोंका फैसला किया जाय। कमेटी समाजका अैसा संगठन भी न करे कि वह राजनीतिक या दूसरे मकसद हासिल करनेवाली पार्टी बन जाय; और न अुसे धार्मिक संप्रदाय जैसा कोअी रूप दिया जाय। अेक रायसे यह मंजूर किया गया कि न तो समाज और न यह कमेटी अैसी कोअी बात करेगी। कमेटीका काम होगा: सेवकोंका अेक रजिस्टर रखना, सालाना मेलेके लिअे जरूरी अिन्तजाम करना और सारे देशमें फैले हुअे मेम्बरोंको अेक सूत्रमें बांधनेका काम करना। कमेटी बनानेमें अैसे कार्यकर्ता चुननेका ध्यान रखा गया है, जो किसी न किसी तरहके रचनात्मक काममें भाग ले रहे हैं और अुस तरहका जीवन जीनेकी कोशिश करते रहे हैं जैसा गांधीजी हमारे लिअे पसन्द करते, जिन्होंने अपने आपको पीछे रखकर काम किया है, जो अभी तक प्रकाशमें नहीं आये हैं, जो संयोगसे बड़े नहीं बन गये हैं, और लोग जिनकी बात वहीं तक मानेंगे जहां तक वे अपने विश्वास पर अमल करेंगे।

सर्वोदय समाज अेक संस्थाकी तरह काम नहीं करेगा। वह खुद कोअी काम या प्रोग्राम अपने हाथमें नहीं लेगा, हालां कि सब सेवकोंसे यह आशा रखी जायगी कि वे किसी रचनात्मक कामको आगे बढ़ानेके लिअे कुछ न कुछ करते रहें। हर सेवकको अपनी योग्यताके अनुसार काम करनेकी आजादी रहेगी—बेशक अुसका मेल गांधीजीकी शिक्षाओंसे बैठना चाहिये। लेकिन वह कोअी काम समाजके नाम पर या समाजके लिअे

नहीं करेगा। आशा की जाती है कि जो स्त्री-पुरुष श्रद्धा या अिच्छा रखते हैं, वे अिस समाजमें शामिल होंगे और आजादीसे खुद होकर, बिना किसी डर या तरफदारीके, गांधीजीकी शिक्षाओं पर अपने जीवनमें अमल करेंगे। सारी दुनियामें अैसे लोगोंकी तादाद बहुत बड़ी होनी चाहिये; और यह आशा है कि समाज अपने मेम्बरोंके मारफत गांधीजीकी शिक्षाकी जोतको जलती ही नहीं रख सकेगा, बल्कि अुसके प्रकाशको ज्यादा ज्यादा दूर तक फैला सकेगा।

(हरिजनसेवक, ४-४-'४८) राजेन्द्रप्रसाद

९

सर्वोदयका सिद्धान्त

आज दुनियाकी स्थिति बहुत सोचने लायक है। जिधर देखो अुधर अशान्ति और झगड़े चल रहे हैं। यहूदियों और अरबोंका झगड़ा तो पहले जैसा ही जारी है। चीनमें यादवी युद्ध शिखर तक पहुंच गया है। डच लोगोंने नये सिरेसे अिण्डोनेशियाके स्वतंत्रतावादियों पर हमला किया है। अितने सब नये नये झगड़े अुठनेके साथ पुराने झगड़ोंके स्मरण भी ताजे किये जा रहे हैं। अपने प्रतिपक्षियोंको युद्धके गुनहगार समझकर फांसी पर चढ़ानेका नाटक जापानमें हो रहा है, मानों युद्धके गुनहगार वे जापानवाले ही थे और अुनको फांसी पर चढ़ानेवाले ये सब शान्तिके दूत ही हैं। या तो अुन्हें फांसी पर चढ़ानेसे दुनियामें शान्ति स्थापित होनेवाली है !

यहां हिन्दुस्तानमें भी काश्मीरके मामलेमें हिंसाका सहारा लेना पड़ा है। अुसमें किसका कितना दोष है, यह दूसरी बात है। पर अहिंसासे काश्मीरका मामला तय नहीं हो सका, यह दुःखकी बात है।

वैसे हिन्दुस्तानमें अिस वक्त राजकीय अेकता तो बढ़ रही-सी दीखती है। यहां छोटे-छोटे राज्य मिटकर बड़ी-बड़ी अिकाअियां बन

रही हैं। लेकिन राजकी अेकतासे भी बढ़कर जो मानसिक अेकता है, वह अुतनी नहीं दीख रही है। मैं बहुत मिसालें नहीं दूंगा। हमने मध्यभारतका अेक प्रान्त तो बना लिया है, लेकिन वहां अिन्दौरवाद और ग्वालियरवाद चल रहा है। हैदराबादका मामला कुछ हल होने पर आया है, तो वहां भी कांग्रेसमें दो पक्ष पड़ गये हैं।

अिस तरह भेदबुद्धि जोर कर रही है। विद्यार्थियोंको अपने-अपने जालमें पकड़नेके लिअे तरह-तरहकी शक्तियां काम कर रही हैं, मानो विद्यार्थी कोअी मछलियां हों! मजदूरोंके मामलेमें भी भेदबुद्धि बढ़ रही है, और मामला सुलझनेके बजाय अुलझ ही रहा है।

यह सारा बयान मैं अिसलिअे नहीं कर रहा हूं कि आपके चित्त पर निराशाको अंकित करूं। मैं निराशावादी नहीं हूं, क्योंकि मैं जानता हूं कि मानव-आत्मा परम शान्त और अभेदमय है; और यह जो अशान्ति और भेदका आभास हो रहा है, अुसकी मानव-आत्माकी परम शान्तिके सामने कोअी गिनती नहीं। पर स्वच्छ कपड़े पर जरा-सा धब्बा भी ध्यान खींच लेता है। जब विश्वयुद्ध चल रहा था, तब भी मैं निराश नहीं था। मैं तो यही मानता था और मानता हूं कि विश्वके महायुद्ध अीश्वरी होते हैं; और चाहे कुछ सजा देकर ही क्यों न हों, पर होते हैं वे मानवकी अुन्नतिके लिअे ही। मैं यह भी जानता हूं कि अैसे महायुद्ध भी प्रशान्त आत्माके अेक कोनेमें चला करते हैं। वे आज दीख पड़ते हैं; चन्द रोज बाद खतम हो जाते हैं।

लेकिन आज मैंने जो बहुतसी बातें बयान की हैं, वे सोचनेके लिअे हैं, न कि निराश होनेके लिअे। जब मैं गहन विचार करता हूं, तो अिन सबका हल मुझे सर्वोदय समाजकी कल्पनामें दीख पड़ता है। लोग पूछते हैं — 'सर्वोदय समाजकी संघटना किस प्रकारकी है?' मैं कहता हूं, वह कोअी संघटना नहीं है, अेक क्रांतिकारी शब्द है। अुस पर हम सोचें और अमल करें, तो मार्ग मिल जायगा।

पश्चिमके लोगोंने जो ध्येय हमारे सामने रखा है — अधिकसे अधिक लोगोंके अधिकसे अधिक सुखका—अुसमें बहुसंख्यकों और अल्पसंख्यकोंके झगड़ोंका बीज है। लेकिन सर्वोदयकी दृष्टि, जैसे कि गीताने कहा है, सर्वभूतहितमें रत होनेकी है। अुसके लिअे हम सबको सत्य और अहिंसाकी निष्ठा बढ़ानी है। अपने निजी और सामाजिक जीवनमें तथा व्यापार, अुद्योग आदिमें कभी असत्यका अुपयोग नहीं करना है; जहां तक हो सके हिंसाका प्रवेश न हो अैसी कोशिश करनी है; और समाजके अुत्थानके लिअे जो विविध रचनात्मक कार्यक्रम बताया गया है, अुसमें से जिससे जितना बन सके अुतना करना है— व्यक्तिगत तौर पर, मित्रोंको साथ लेकर और जरूरत पड़ने पर स्थानिक संस्था बनाकर। और अुसके पीछे जो महान दृष्टि है, अुसका विचार करना है और अुसीका अुच्चार यानी जप भी करते रहना है।

अगर हम नवयुवकोंका और सबका ध्यान अिस महान विचारकी तरफ खींच सकें, तो मैं मानता हूं कि दुनियाकी बहुतसी समस्याओंका हल अिसीमें से निकल सकता है। नहीं तो केवल राजकीय तरीकोंसे — जो आजकल दुनियाभरमें आजमाये जा रहे हैं—कुछ होनेवाला नहीं है।

(हरिजनसेवक, १३-२-'४९) **विनोबा**

१०

सर्वोदयका विचार

सर्वोदय शब्दका मूल अन्त्योदयकी कल्पनामें है। रस्किनकी 'अण्टु दिस लास्ट' के अपने अनुवादको बापूने सर्वोदय नाम दिया है। सबसे नीची श्रेणीके जो हैं, अुनका भी, अन्त्योंका भी अुदय सर्वोदयमें है। सारी दुनियाका अुदय जब होगा तब होगा। लेकिन भंगीका अुदय तो होना ही चाहिये। शब्द तो मैं सर्वोदय रखना ही पसन्द करूंगा, क्योंकि सर्वोदयमें अन्त्योदय आ जाता है। केवल 'अन्त्योदय' शब्दमें भाव यह आता है कि बाकीके लोगोंका अुदय हो चुका है। लेकिन अैसा नहीं है। अिस कमबख्त दुनियामें अुदय किसीका नहीं है। सबका अस्त ही है। किसीके घरमें चूल्हा जलता ही नहीं है, तो किसीके घरके चूल्हेमें रोटियां जल जाती हैं। दोनोंके चूल्होंका अस्त हुआ है। और दोनोंको खाना नहीं मिल रहा है। समाजके पैसेदार लोगोंके जीवनका परिपूर्ण अस्त कबका ही हो चुका है; और जो दरिद्री हैं अुनका तो अस्त है ही। तुलसीदासजीका अेक भजन मुझे यहां याद आता है। अुन्होंने भगवानसे कहा है कि 'प्रीतिकी रीति आप ही जानते हैं। आप बड़ेकी बड़ाअी दूर करते हैं और छोटेकी छोटाअी। यही आपकी प्रीतिकी रीति है।' बड़ोंकी बड़ाअी कायम रखना अुन पर प्रीति करना नहीं है। अधिक धनवालोंकी बुद्धि जड़ धनकी संगतिसे जड़ और निस्तेज बन जाती है। जो जड़ बन गये हैं अुनका और जिन्हें खानेको नहीं मिलता है अुनका दोनोंका अुदय होना बाकी है। अिसलिअे शब्द तो सर्वोदय ही रहे। लेकिन फिक्र हम अन्त्योदयकी भी रखें।

अपरिग्रहका जिक्र पिछले साल मैंने किया था। जैसे भंगीपनको मिटाना है, वैसे ही परिग्रहको भी मिटाना है। वह अपरिग्रह व्रतसे ही हो

सकता है। राजेन्द्रबाबूने सुबह कहा कि कुछ लोगोंका विचार अपरिग्रहका है, तो दूसरे कुछ लोगोंका अपहरणका। अपहरणवादी कहते हैं कि हमारे विचारका कुछ तो प्रयोग अेक देशमें हमने कर बताया है। आपका अपरिग्रह विचार चलेगा, असमें हमारी श्रद्धा नहीं है। वे क्या कहते हैं, असे हम छोड़ दें। लेकिन हमारे देशकी हालत अैसी है कि अगर हम अपरिग्रह व्रतका अमल न करें, तो संघर्ष टल नहीं सकता। मैंने अजमेरमें देखा कि मारवाड़ियों और सिन्धी शरणार्थियोंके बीच द्वेषकी भावना भरी है। अब वह कम हो रही है, क्योंकि सिन्धी व्यापारी वहांसे हट रहे हैं। मैंने वहां कहा था कि हिन्दुस्तानमें कभी हिन्दू-मुसलमानोंके बीच, तो कभी ब्राह्मण और ब्राह्मणेतरके बीच, तो कभी सिन्धियों और मारवाड़ियोंके बीच झगड़े होते ही रहेंगे। जब तक हिन्दुस्तानकी आजकी दुर्दशा कायम रहेगी, जब तक अन्नकी अुत्पत्ति नहीं बढ़ेगी, द्वेषका यह जहर किसी न किसी रूपमें कायम रहेगा। झगड़े मिटेंगे नहीं, हिंसा टलेगी नहीं।

मतलब यह कि शरीरश्रमके साथ अपरिग्रह व्रत और अपरिग्रह व्रतके साथ शरीरश्रम दोनों अेक-दूसरेके साथ आते हैं। वे अेक ही चीजके दो पहलू हैं। गये साल अपरिग्रहकी बात हो रही थी। तब यह पूछा गया था कि किसकी कितनी जरूरत है, यह कौन तय करे? तब मैंने कहा था कि जिसकी जरूरत वही तय करे। हमारे पास धन नहीं है, अितनेसे हम अपरिग्रही नहीं बन जाते। हमारे पास दूसरा भी परिग्रह पड़ा है। पैसे नहीं तो अैसी पुस्तकें पड़ी हैं, जिनकी हमें कभी अेक बार ही जरूरत पड़ती है; बाकी हमेशा बन्द ही पड़ी रहती हैं। यह अेक तरहका परिग्रह ही है। जिस तरह हमें अपने जीवनमें शोध करनी चाहिये।

परिग्रहका दूसरा भी अेक पहलू है। हम यह मान लेते हैं कि खुदके लिअे हम परिग्रह न करें, लेकिन संस्थाओंके लिअे कर सकते हैं। हिंसावादी अपने लिअे हिंसा नहीं करना चाहता। लेकिन समाज और

राष्ट्रके लिअे हिंसा करनेमें पाप नहीं समझता। हम भी संस्थाके लिअे परिग्रह क्षंतव्य मानते हैं। मैं अेक और मिसाल दूं। चरखा-संघका पैसा बैंकमें पड़ा रहता है, जिसका व्याज अुसे मिलता है। सोचनेकी बात है कि व्याज मिलता कहांसे है? वह पैसा दूसरे धन्धोंमें लगाया जाता है, अिसलिअे व्याज मिलता है। चरखेके लिअे दिया हुआ 'अियरमार्क' पैसा गोसेवा जैसे अच्छे काममें नहीं लगाया जा सकता। यह मर्यादा हम मानते हैं। और वह ठीक है। लेकिन बैंकों द्वारा वह दूसरे धन्धोंमें लगाया जा सकता है, लगाया जा रहा है। यह अेक महान आपत्ति है। यह धनलोभ ही है; चाहे संस्थाके नामसे ही क्यों न हो। अिसी तरह हमनें कस्तूरबा कोषमें फंड अिकट्ठा किया है और अब गांधीजीके स्मारकमें करते जा रहे हैं। अितने पैसेकी जरूरत ही क्यों होनी चाहिये? और अगर पैसेकी जरूरत है और अुसे अिकट्ठा किया गया है, तो साल दो सालमें अुसे खतम करना चाहिये। पर यह बनता नहीं और बैंकमें पैसा रखकर व्याज लेनेकी बात चुभती नहीं। हम अुसमें दोष नहीं देखते, क्योंकि हम रहते ही अैसे समाजमें हैं, जहां व्याज न लेना मूर्खता मानी जाती है। गीतामें 'त्यक्त-सर्व-परिग्रहः' कहा है। सब परिग्रह छोड़ो। अगर परोपकारके लिअे भी हम परिग्रहका मोह रखते हैं, तो वे सारे दोष हमारे काममें आते हैं, जो अेक सांसारिकके काममें आते हैं।

(हरिजनसेवक, १०-४-'४९) **विनोबा**

११

सर्वोदय आन्दोलन

मैंने अपने पिछले लेखमें डॉ० ओ० स्टेनले जोन्सकी 'महात्मा गांधी — अेन अिन्टरप्रिटेशन' नामक पुस्तकका अुल्लेख किया है। अुन्होंने पश्चिमकी दुनियाको सर्वोदयकी कल्पनाका अिस तरह परिचय करवाया है:

"दूसरा अेक आन्दोलन है, जिसका नाम सर्वोदय है। सर्वोदयका शाब्दिक अर्थ है सम्पूर्ण अुदय या तरक्की। यह आन्दोलन कोअी संगठित संस्थाका रूप नहीं लेगा। वह तो अेक भावनाका बाहरी दर्शन होगा। जो गांधीजीके बुनियादी सिद्धांत — सत्य और अहिंसा — को अपने मनमें स्वीकार कर लेगा, वह अुसका मेम्बर माना जायगा। वह अेक आध्यात्मिक भाअीचारा होगा। सालमें अेक दफा जितने भी सेवक अिकट्ठा हो सकें, अेक मेलेमें जमा होंगे। मेलेका स्वरूप कुछ धार्मिक जैसा ही होगा। वहां वे महात्माकी भावनाओंका हिन्दुस्तान और दुनियामें प्रचार करनेके लिअे क्या कर सकते हैं अिस पर विचार करेंगे। अुसका मेम्बर सारी दुनियामें कोअी भी और कहीं भी हो सकता है। कोअी भी 'मंत्री, सर्वोदय समाज, वर्धा, सी० पी०, हिन्दुस्तान' अिस पते पर अेक खत लिखकर यह जाहिर कर सकता है कि वह अपने आपको मेम्बर मानता है। लेकिन यह भी जरूरी नहीं है। सिर्फ गांधीजीके सत्य-अहिंसाके सिद्धांतको मान लेनेसे ही वह अपने आप मेम्बर हो जाता है।"

अिस अुल्लेखके कारण दुनियाके जुदा-जुदा मुल्कोंसे मित्रोंने समाजके मेम्बर होनेके लिअे खत लिखे हैं। अिस सम्मेलनके दूसरे प्रस्तावमें अिन सब मित्रोंका समाजमें स्वागत किया है और बतलाया गया है कि रचनात्मक कार्यक्रमके कमसे कम आठ प्रकार दुनियाके बहुतसे भागोंमें लागू होते हैं। अुदाहरणके लिअे, बुनियादी तालीम, ग्रामोद्योग, शराब-बन्दी, रंग और जातिभेद निवारण, कोढ़ी-सेवा, वगैरा; और अलबत्ता **शान्ति**का काम और **खादी**का सन्देश तो है ही। **खादी**का नाम सुनकर किसीको आश्चर्य हो सकता है। लेकिन जैसा श्री काकासाहब कालेलकरने अेक खानगी सभामें और श्री विनोबाने सम्मेलनके अपने पहले दिनके भाषणमें बतला दिया है, कि गांधीजीके रचनात्मक कार्यक्रममें खादीका न सिर्फ हिन्दुस्तानके लिअे बल्कि सारी दुनियाके लिअे मुख्य स्थान है। यह याद रखना चाहिये कि कपासका कपड़ा ही खादी नहीं है। अुसमें हाथ-कता हाथ-बुना रेशमी और अूनी कपड़ा भी आ जाता है। और सर्वोदयके आदर्श पर पूरा विचार कर लेनेके बाद यह समझना किसीके लिअे मुश्किल नहीं है कि सिर्फ हिन्दुस्तानमें ही नहीं, बल्कि अमेरिका और युरोपके सबसे ज्यादा अुद्योग-प्रधान और यंत्रसे काम करनेवाले देशोंमें भी हरअेकको जीवनकी अिस जरूरतके सम्बन्धमें जितना हो सके अुतना स्वावलम्बी होना चाहिये। सच बात तो यह है कि, जैसा श्री विनोबाने कुछ महीनों पहले बतलाया था, सभ्य समाजमें मनुष्यके लिअे अन्नसे भी पहले वस्त्रकी ज़रूरत है। आप कुछ दिनोंसे भूखे रहे हों, फिर भी दुनियामें सिर अूंचा किये फिरनेमें आपको शरम न मालूम होगी, लेकिन आजके सभ्य समाजमें तो आप अपने घरके सब भागोंमें भी नंगे नहीं फिर सकते। अिसलिअे चाहे हरअेकके लिअे अपना अन्न पैदा करना संभव न हो, फिर भी अुसे कमसे कम अपना कपड़ा तो बना ही लेना चाहिये। और सौभाग्यसे यह चीज अन्न पैदा करनेकी अपेक्षा ज्यादा सरल और अपने वशकी है। अिसके अलावा, नैतिक दृष्टिसे देखें तो खादी शान्त और अहिंसक समाज व्यवस्थाकी खास प्रतीक

है। वह अुद्योगशीलता, शरीरश्रम, अशोषण और अपने व्यक्तित्वकी सूचक है। मैं नहीं जानता कि सर्वोदय आन्दोलनके हिमायती अिस बातको किस हद तक मान सकेंगे। लेकिन जैसे श्री काकासाहब कालेलकरने हिम्मतके साथ भविष्यवाणी की है, अेक दिन अैसा आयेगा जब अिस बातको स्पष्ट मान लिया जायेगा और विदेशोंमें जानेवाला हिन्दुस्तानी दुनियाके बड़ेसे बड़े अुद्योग-प्रधान देशके सामने भी चरखा और करघा रखते नहीं सकुचायेगा।

(हरिजनसेवक, २७-३-'४९) कि० घ० मशरूवाला

१२

सर्वोदयकी नअी संस्कृति

संस्कृति चीज ही अैसी है कि अुसमें सब तरहकी खूबियोंके लिअे गुंजाअिश होते हुअे भी, संकुचितताकी दीवारें वह बरदास्त नहीं कर सकती। अिस बातमें संस्कृति और हवा दोनोंके कानून अेकसे होते हैं। दिल्लीकी हवा और कलकत्तेकी हवा अेकसी नहीं है। दोनों अपनी-अपनी खूबियां रखती हैं, तो भी दोनोंके बहावमें कोअी रोक-टोक नहीं है। संस्कृतिका अैसा ही है। अुसके बहनेमें रुकावट पैदा करनेसे दुर्गन्धि पैदा होती है और तन्दुरुस्ती बिगड़ जाती है। यह बिलकुल गलत खयाल है कि रोटी-बेटी व्यवहारसे संस्कृतिकी खूबीका नाश होता है; अुल्टे अुसमें ताजगी आती है। आपसी लेन-देनसे दोनोंकी समृद्धि बढ़ती है और गलतफहमियोंके लिअे गुंजाअिश कम रहती है। जहां-जहां धर्मकी बात नहीं थी, वहां-वहां हमने आपसी लेन-देन अच्छी तरहसे चलाया था। संगीतकी अेक ही मिसाल हम लें। हृदयकी सर्वोच्च भावनाअें संगीतके जरिये व्यक्त होती हैं। मुगल कालमें संगीतके क्षेत्रमें हमारा आदान-प्रदान बिना रोक-टोक चला। अिससे न मुस्लिम संस्कृतिको

कोअी नुकसान पहुंचा, न हिन्दू संस्कृति भ्रष्ट हुअी। भावनाओंके जैसी नाजुक और गूढ़ बातोंमें जब कोअी खतरा नहीं दीख पड़ा, तो खान-पानके जैसी स्थूल बातोंमें हम क्यों डरते हैं, यह आज हमारे ध्यानमें नहीं आता है। मांसाहार और शाकाहारका भेद महत्त्वका है सही, लेकिन अुसे तो हम अेक-दूसरेके घरों पर खाते हुअे भी संभाल सकते थे। हिन्दू-हिन्दुओंके बीच भी यह बात संभालनी पड़ती है।

दिग्विजयका युग कबका खतम हो चुका है। अब मानव-सेवाका युग आ गया है। हिन्दू, मुसलमान, ख्रिस्ती आदि सब धर्मोंमें जो जो तंग-दिल वर्ग हैं, अुनका विरोध होते हुअे भी हमें आगे बढ़ना होगा। पूंजीवादी, साम्राज्यवादी और हिंसावादी आदि सब भूतकालके अुपासकोंको अेक बाजू पर हटाकर हमें आगे बढ़ना होगा। 'सेवा और मानवता', 'मानवता और सेवा', यही अेक मंत्र अपने हृदयमें रखते हुअे और जपते हुअे हमें सबका समन्वय करना है। अितिहासने आज तक जो कुछ भी सिखाया, जो कुछ भी कमाया और जो कुछ भी बचाया, अुस सबको अेकत्र लाकर मानवताके जीवनमें हमें अब बराबर गूंधना है। अुसे अेक-जीव बनाना है। और अुसमें से सर्व कल्याणकारी, सर्वोदयकारी नयी संस्कृतिका निर्माण करना है।

अिसके लिअे अखूट धीरज चाहिये। अटूट प्रयत्न-परंपरा चाहिये। असीम, अमिट प्रेम-शक्ति चाहिये। जो लोग सबसे नीचे हैं, सबसे पिछड़े हैं, सब तरहसे हारे हैं, अुन्हें अपनानेकी शक्ति जिसमें होगी, वही भविष्यकी संस्कृतिकी धुरा वहन करेगा। अुसी धुरीणके पीछे दुनिया चलेगी। भूतकालीन अितिहासके अध्ययनसे, वर्तमान कालके आकलनसे और भविष्यकालके ध्यान-दर्शनसे जो त्रिकालदर्शी हुआ है, अुसीका यह काम है। वह श्रद्धा-धैर्यके साथ अपनी यह शक्ति आजकी मानव-जातिको अर्पण करेगा। और सामान्य मानवमें भी लोकोत्तर शक्ति पैदा करके गांधीजीका युग-कार्य पूरा करेगा।

अिसमें आप और हम, सामान्य लोगोंका कर्तव्य क्या है? हमारा कर्तव्य यह है कि हम नये युगके अिस नये धर्मको पहचानें, हमारे अन्दर जो शक्तियां सोअी हुअी हैं अुन्हें पहचानें, हमारे और भारत भाग्य-विधाताने नव संस्कृतिके निर्माणका काम जिसे सौंपा होगा, अुसे भी पहचानें।

अिसके लिअे हमें अपने हृदयकी सब पुरानी ग्रन्थियां छोड़ देनी होंगी और अपने हृदय-कमलको नव संस्कारोंके लिअे अुत्फुल्ल रखना होगा। गांधीजीके द्वारा हमें दीक्षा मिली ही है। और अखण्ड परिश्रमकी आदत भी अुन्होंने चन्द लोगोंमें डाली है। अुसीका वायुमंडल सर्वत्र व्यापक करना है, क्योंकि यह सर्वोदयका युग है।

(हरिजनसेवक, २–४–'५०) काका कालेलकर

१३

सर्वोदयकी साधना

अेक साल पहिले अिसी दिन और ठीक अिसी समय अेक घटना घटी थी, जिसके कारण हम सबको शर्मिंदा होना है। लेकिन वह घटना अैसी भी है, जिससे हमें चिरन्तन प्रकाश मिल सकता है। अुस घटनाने हमें अच्छी तरह सिखा दिया है कि देह और आत्मा अलग-अलग हैं। मुझे बहुत लोगोंने पूछा कि गांधीजी अीश्वरके बड़े भारी अुपासक थे, तो अुसने अुनकी रक्षा क्यों नहीं की? जो अीश्वरने अुनकी रक्षा की है, अुससे ज्यादा रक्षा और हो भी क्या सकती थी? देहासक्तिके कारण हम अुसे न पहचान सकें यह दूसरी बात है। मुझे यहां कुरानका अेक वचन याद आता है, जिसमें कहा गया है कि जो अीश्वरकी राह पर चलते हुअे कतल किये जाते हैं, मत समझो कि वे मरे हैं। वे तो जिन्दा हैं, जो भी तुम अुन्हें देख नहीं पाते।

अीश्वरकी राह पर चलते हुअे मरना भी जिन्दगी है, और शैतानकी राह पर जिन्दा रहना भी मौत है। गांधीजीने अीश्वरकी राह पर, सचाअी और भलाअीकी राह पर, चलनेकी हमेशा कोशिश की। वे अुसीकी हिदायत लोगोंको देते रहे। अुसीके लिअे वे कतल हुअे। धन्य है अुनका जीवन, और धन्य अुनकी मृत्यु !

भलाअीकी राह पर चलनेकी शिक्षा अनेक सत्पुरुषोंने दी है। लेकिन अिन्सानको अभी पूरा यकीन नहीं हुआ है कि भलाअीसे भला होता ही है। वह अभी तक प्रयोग कर रहा है। देखता है, क्या बुराअी बोनेसे भी भला नहीं अुग सकता? बबूल बोनेसे आम अुगेगा और आम बोनेसे बबूल, यह शंका तो अुसके मनमें नहीं आती। शायद पहलेके जमानेमें यह शंका भी अुसे रही होगी। लेकिन अब तो भौतिक सृष्टिमें "यथा बीज तथा फल" वाला न्याय अुसको जंच गया है। फिर भी नैतिक सृष्टिमें अुस न्यायके विषयमें अुसे शंका है। साधारण तौर पर भलाअीसे भला होता है यह अुसने पाया है। लेकिन अिस निर्णय पर वह अभी नहीं पहुंच पाया है कि खालिस भलाअी भी लाभदायी हो सकती है।

दूसरे कुछ लोगोंको खालिस भलाअी मंजूर है, लेकिन वह निजी जीवनमें। "व्यक्तिगत जीवनमें शुद्ध नीति बरतनी चाहिये, अुससे मोक्ष तक पा सकते हैं, लेकिन सामाजिक जीवनमें भलाअीके साथ बुराअीका कुछ मिश्रण किये बगैर चलेगा नहीं," यह अुनका खयाल है। यह विचार अैसा है कि सत्य और असत्यके मिश्रण पर दुनिया टिकी है। गांधीजीने अिसको कभी नहीं माना। और सत्य, अहिंसा आदि मूलभूत सिद्धांतोंका अमल सामाजिक तौर पर हमसे करवाया। अुसके फलस्वरूप हमें अेक क़िस्मका स्वराज्य मिल गया है। जिस योग्यताका हमारा अमल था, अुसी योग्यताका हमारा यह स्वराज्य है। अुसके लिअे वे सिद्धांत जिम्मेदार नहीं हैं, हमारा अमल जिम्मेदार है। अेक त्रिकोणके बारेमें जो सिद्धांत साबित होता है, वह सब त्रिकोणों पर लागू होता है। व्यक्तिके

लिअे अगर शुद्ध नीति कल्याणकारी है, तो समाजके लिअे भी वह वैसी ही कल्याणकारी होनी चाहिये।

कुछ लोगोंका खयाल है कि सत्यकी कसौटी पर अपने अुद्देश्योंको कस लें तो बस है, फिर साधन जैसे भी हों चल जायेंगे। लेकिन गांधीजीने अिस विचारका हमेशा विरोध किया है। अुन्होंने तो यहां तक कह दिया था कि मैं सत्यके लिअे स्वराज्य भी छोड़नेको तैयार हो जाअूंगा। अिससे अुनका मतलब यह नहीं था कि वे स्वराज्य नहीं चाहते थे, या अुसकी कीमत कम समझते थे। वे तो साधन-शुद्धिका महत्त्व बताना चाहते थे। स्वराज्यके लिअे वे जिन्दगीभर लड़े। लेकिन वे कहते थे कि स्वराज्य तो सत्यमय साधनोंसे ही मिल सकता है। शुद्ध साधनोंसे प्राप्त किया हुआ स्वराज्य ही सच्चा स्वराज्य होगा। साधकको साध्यकी अपेक्षा साधनके बारेमें ही अधिक सोचना चाहिये। साधनकी जहां आखिरी आती है, वहीं साध्यका दर्शन होता है। अिसलिअे साध्य और साधनका भेद ही काल्पनिक है। साधनोंसे साध्य हासिल होता है अितना ही नहीं, बल्कि अुसका रूप ही साधनों पर निर्भर रहता है। वैसे हरअेकको अपना अुद्देश्य या मकसद अच्छा ही लगता है। अिसलिये अच्छे मकसदका दावा कोअी खास कीमत नहीं रखता। साध्य-साधनोंमें बेजोड़पन नहीं होना चाहिये। अगर देखा जाय तो यह विचार नया नहीं है। लेकिन अुसका प्रयोग जिस बड़े पैमाने पर गांधीजीने हिन्दुस्तानमें किया, वह बेमिसाल है।

दूसरे कुछ लोग कहते हैं कि सचाअी और भलाअीका आग्रह तो अच्छा है, लेकिन हर हालतमें क्रियाशील रहनेका महत्त्व अधिक है। अगर भलाअी करनेके प्रयत्नमें क्रियाशीलतामें बाधा आती हो, तो भलाअीका आग्रह कुछ ढीला करके, या अुस आदर्शसे कुछ नीचे अुतरकर क्रियाशील रहना चाहिये। निष्क्रिय हरगिज नहीं बनना चाहिये। मैं मानता हूं कि यह भी अेक मोह है। जेलमें जब लोगोंको अधिक दिन तक रहना पड़ता था, तो अुसको "जेलमें सड़ना" नाम दिया जाता था।

तब गांधीजी समझाते थे कि शुद्ध पुरुषकी निष्क्रियतामें भी महान शक्ति रहती है। गीताने अपनी अनुपम भाषामें अिसीको अकर्ममें कर्म कहा है। क्रियाशीलता बेशक महान है। लेकिन सचाअी और भलाअी अुससे भी बढ़कर है। खास हालतोंमें निष्क्रिय भी रह सकते हैं। लेकिन सचाअीको कभी छोड़ नहीं सकते।

कुछ लोग, जो कि अपनेको व्यवहारवादी कहते हैं, सचाअी पसन्द करते हैं, लेकिन अेकपक्षी सचाअीमें खतरा देखते हैं। कहते हैं कि सामनेवाला अगर असत्यका अुपयोग करता है, हिंसा करता है और हम ही सत्य और अहिंसा पर डटे रहेंगे, तो अुससे हमारा नुकसान होगा। ये लोग वास्तवमें सचाअीकी कीमत ही नहीं जानते। अगर जानते होते तो अैसी दलील नहीं करते। हमारे प्रतिपक्षी (विरोधी) भूखे रहते हैं तो हम ही क्यों खायें, अैसी दलील वे नहीं करते। जानते हैं कि जो खायेगा वह ताकत पायेगा। अिसका प्रतिपक्षीसे कोअी सम्बन्ध नहीं है। अेकपक्षी खाना तो मंजूर है, लेकिन अेकपक्षी सचाअी, प्रीति मंजूर नहीं। अिसका क्या अर्थ है? सामनेवाला जैसा होगा वैसे हम बनेंगे, यानी वह जैसा हमें नचायेगा वैसा हम नाचेंगे। अिसका मतलब यही हुआ कि आरंभशक्ति — अिनीशिअेटिव्ह — हमने अुसके हाथमें सौंप दी। यह पुरुषार्थहीन विचार है, और अुससे अेक दुष्ट चक्र तैयार होता है। दुर्जनताका अेक सिलसिला जारी होता है। अुसको तोड़ना हो तो हमें हिम्मत करनी चाहिये और निष्ठापूर्वक ,परिणामका हिसाब लगाये बगैर, प्रेम करना चाहिये, अुदारता रखनी चाहिये। आखिर सत्य, प्रेम और सज्जनता ही भावरूप चीजें हैं, असत्यादि अभाव-रूप हैं। यह तो प्रकाश और अंधकारका झगड़ा है। अुसमें प्रकाशको डर कैसा?

यह है सत्याग्रहकी विचारधारा, जैसी कि मैं अुसे समझा हूं। अिसीमें सबका भला है। अिसलिअे अिसको सर्वोदयकी विचारधारा भी कहते हैं। गांधीजीकी हत्या हमारे लिअे अेक चुनौती है। अगर सचाअीमें हमारी परम निष्ठा है, अुसका अमल हमारे निजी और सामाजिक

जीवनमें करनेकी वृत्ति हम रखते हैं, तभी हम अिस चुनौतीको स्वीकार कर सकते हैं। अगर हम यह वृत्ति नहीं रखते, तो अितना ही नहीं कि हम अुस चुनौतीको स्वीकार नहीं कर सकते, वल्कि अिच्छा न रखते हुअे भी हम अुस हत्याकारीके पक्षमें दाखिल हो जाते हैं।

मैं आशा करता हूं कि गांधीजीकी देहमुक्ति हममें शक्तिका संचार करेगी और हम सत्यनिष्ठ जीवन जीकर सर्वोदयकी तैयारीके अधिकारी बनेंगे।

(हरिजनसेवक, २७-२-'४९) **विनोबा**

१४

सर्वोदयकी दीक्षा

रचनात्मक काम करनेवाले संघ अब तक अपने-अपने काम अलग-अलग करते थे। मौके-मौके पर अुनमें यद्यपि सहयोग होता था, फिर भी अेकांगी दृष्टिकी वजहसे अुनमें अहिंसक जीवनका तेज पैदा नहीं हो सका। अिसलिअे सम्मिलित काम करनेकी जरूरत सबको दिखाअी देने लगी और रचनात्मक काम करनेवालोंके सम्मेलनमें वैसा ठहराव भी पास हुआ। अुसके मुताबिक संघोंका अेकीकरण करनेकी दृष्टिसे विचार भी होने लगा। संघोंको अेक होना है, यानी अुनमें काम करनेवालोंको अपने जीवनमें ही वैसा फेरबदल करना है। अुसके लिअे बताया गया है कि हरअेकको कमसे कम नीचे लिखी बातों पर अमल करना चाहिये। चरखा-संघने वैसा ठहराव भी पास किया है:

१. हरअेक नियमित रूपसे सूत काते।

२. खुदके कते सूतकी, या घरमें कते सूतकी या प्रमाणित खादी ही पहने।

३. जहां तक हो सके ग्रामोद्योगी चीजोंका अिस्तेमाल करे।

४. अपने स्थान पर गायके दूधका अिस्तेमाल करनेका विशेष प्रयत्न करे।

५. महीनेमें कमसे कम अेक रोज पाखाना-सफाअीका काम करे या गांव-सफाअीका कुछ काम करे।

६. जहां अिन्तजाम हो, वहां अपने बच्चोंको बुनियादी तालीम दिलावे।

७. नागरी, अुर्दू और दक्षिणके प्रान्तोंकी अेक लिपि सीखनेका प्रयत्न करे।

जीवन-शुद्धिका यह कार्यक्रम है और रचनात्मक काम करनेवाले संघोंके लिअे वह कर्तव्यरूप रखा गया है। लेकिन सबके लिअे भी वह अमल करने जैसा है। 'सर्वोदय समाज'के सेवक अुसके अनुसार काम करें, तो 'सर्वोदय समाज' आगकी तरह चारों ओर फैल जायगा। ये नियम सिर्फ दिशा दिखानेवाले हैं। अैसे और भी नियम अपनी जीवन-शुद्धिको लक्ष्य कर हरअेकको बनाने हैं। लेकिन दो पथ्य संभालने चाहियें। अेक यह कि नियमको बोझिल नहीं होने देना है। नियमोंसे जीवनको दिशा मिलनी चाहिये और जीवन सरल बनना चाहिये। दूसरा पथ्य यह कि दूसरोंकी खामियोंकी तलाश करनेके लिअे अिन नियमोंको अुपयोगमें नहीं लाना है। अन्यथा अुनमें से संकुचित बुद्धि और भेदकी भावना ही पैदा होगी। ये दो पथ्य संभालकर 'यदि सेवक बनना है, तो नियमोंका पालन करो।'

(हरिजनसेवक, ११-४-'४८) **विनोबा**

१५

सर्वोदय और दूसरे वाद*

वर्धा, २२-८-'३४

आज सवेरे छः बजे बापू घूम रहे थे, वहां मैं अुनसे मिला। हरिजन आश्रमके ट्रस्टके बारेमें अुन्होंने मुझे सूचनायें दीं। अिसके बाद अिस विषयके बापूके विचारोंके बारेमें बात चली कि 'ग्रामसेवाका काम तंत्रबद्ध नहीं हो सकता', अिसका मतलब क्या। बापूने कहा: "तंत्रके अभावसे मेरा क्या मतलब है यह समझ लिया जाता, तो किशोरलालभाअीको बहुत लिखनेकी जरूरत ही नहीं रह जाती। तंत्रके अभावका मतलब अैसा तो है ही नहीं कि कार्यकर्ताओंका अेक-दूसरेके साथ सम्बन्ध न हो या वे अेक-दूसरेकी मदद न करें। अितना ही नहीं, लेकिन हम तो अेक फंडमेंसे अमुक समय-तक मदद देनेकी भी बात करते हैं। तंत्रके अभावका मेरा मतलब अितना ही है कि हरअेक आदमी गांवमें जहां बैठा हो, वहां अुसे अूपरसे आनेवाली सूचनाओं पर अमल करनेकी जरूरत नहीं, बल्कि अुसे अपनी बुद्धिसे जैसा सूझे, वैसा करनेकी छूट रहे। साथ ही, वह गांवके लिअे अुपयोगी बनकर गांवकी मददसे ही अपना भरण-पोषण करनेवाला बन जाय। और अगर गांव अुसे खानेको न दे, तो वहां कोअी अुद्योग करके वह अपनी जीविका चला ले। अुसे दूसरा कोअी धन्धा न आता हो, तो वह गांवमें बैठकर आठ घण्टे कातेगा और पींजेगा। मेरा तो यह मत है कि जो आठ घण्टे तक समाजको फायदा पहुंचानेवाला धन्धा करे, वह अपनी रोजी कमानेका हकदार हो जाता है। मेरा आदर्श 'समाजवाद' यह है कि सबको समान रोजी मिले। वकील, डॉक्टर, शिक्षक, मजदूर, भंगी वगैरा सबको अेकसी रोजी मिलनी चाहिये। आज सबको रोजी

* लेखककी गांधीजीके साथ हुअी बातचीतका विवरण।

अेकसी नहीं है। अितना ही नहीं, दो आदमियोंकी रोजीके वीच जमीन-आसमानका फर्क है। आजकी हालत तो यह है कि वकील रोजके हजार रुपये लेता है और भंगीको रोजाना आठ आने भी नहीं मिलते।

अिस तरह ग्रामसेवककी वात परसे वापू समाजवाद पर आ गये। मैंने कहा: "रूसमें जो कम्यूनिस्ट पार्टीके मेम्वर होते हैं, अुनके लिअे तो अैसा ही नियम है। पार्टीका मेम्वर चाहे जो काम करे, लेकिन वह दूसरेसे ज्यादा रोजी नहीं ले सकता।" वापू वोले — "तपस्या तो राम और रावणकी अेक ही होगी न?" मैंने कहा कि कम्यूनिस्ट पार्टीके मेम्वरोंके लिअे कड़ा अनुशासन होता है। कोअी भी मेम्वर अुसूलोंको तोड़े, तो दूसरे अुस पर दोष लगाकर अुसे पार्टीके मार्फत सजा कराते हैं या अुसूलोंके पालनके वारेमें अुसकी वहुत गहरी भूल हो, तो अुसे पार्टीमें से निकलवा भी देते हैं। वहांका यह रिवाज है कि पार्टीका हर मेम्वर अपने आचरणकी जांच करता रहता है। वापूने कहा — "हां, मैं रूसके वारेमें खूव जानना चाहता हूं, लेकिन पढ़नेका तो मुझे समय ही नहीं मिलता। पढ़नेका मेरा रस या अुत्साह जरा भी कम नहीं हुआ है। कितावें देखकर मन होता है कि यह पढ़ूं या वह पढ़ूं? लेकिन अपना धर्म समझकर कितावें पढ़नेकी वृत्तिको मैं रोक लेता हूं। मैं यह कितावें पढ़ने वैठूं कि महादेव गीता पर जो कुछ लिख लाये हैं, वह पढ़ूं? महादेवका लिखा पढ़नेका मेरा धर्म है। मेरी सूचनासे अुन्होंने लिखा है। अिसलिअे कलसे वही लेकर वैठ गया हूं।"

यह वात चल रही थी, अिसलिअे हमारे किसानोंका कर्ज मिटानेके अुपायोंकी वात निकली। और मैंने वापूसे कहा कि धनी लोगोंको ट्रस्टी मानना हो, तो ट्रस्टियोंके नाते अुनकी जिम्मेदारियां हमें अुन्हें साफ समझानी चाहियें। वापूने कहा—"जव देशका शासन आम जनताके हाथमें आवेगा, तव ये काम आसानीसे हो सकने जैसे ह। और राज्य-तंत्र पर आम जनताका काबू आज नहीं तो पच्चीस–पचास वरसमें होने ही वाला है। यह चीज आजके वातावरणमें दिखाअी देती है और आम

जनताका यह हक भी है। अिसलिअे राज्यतंत्र पर अुसका काबू हुअे बिना रह ही नहीं सकता। हो सकता है कि अुन समय भी सारी जनता राज-काजकी बातें न समझे। फिर भी अपने नेताओंकी पसन्दगी तो वह करेगी ही। अुस समय आम लोगोंके नेता या तो हम लोग होंगे या समाजवादी होंगे। जिन्होंने आम लोगोंकी अच्छी तरह सेवा की होगी, अुनके हाथमें देशका नेतृत्व आयगा। हम अिस तत्त्वको मानते हैं कि साधनों पर ही हमारा काबू है और साध्य या नतीजा हमारे हाथमें नहीं है। जब कि समाजवादी लोग अपना मकसद हासिल करनेके लिअे भले-बुरे चाहे जो साधन अख्तियार करनेके लिअे तैयार हैं। लेकिन अगर हम साधनोंकी शुद्धि पर ठीक-ठीक ध्यान रखेंगे, तो आम लोग हमारे ही नेतृत्वमें रहेंगे। समाजवादियोंका कुछ नहीं चलेगा। अुनके हाथमें सत्ता आ जाय, तो वे मिल्कियत जब्त करना, कर्ज रद्द करना वगैरा तोड़-फोड़ करने लगेंगे। लेकिन अगर हम साधनों पर ठीक ठीक काबू रखें, तो समाजवादियोंके हाथमें सत्ता आवे ही नहीं। आज तो कैसी भी बात बोलकर वे धनवानोंको भड़कानेके सिवा दूसरा कुछ कर नहीं सकते। मुझे अुनको भड़काना नहीं, बल्कि सुधारना है। अिसलिअे वर्किंग कमेटीमें अिस बारेमें कांग्रेसकी नीति मैंने साफ कराअी। बाकी समाजवादियोंकी बातोंको तो मैं मजाकमें अुड़ा सकता हूं। अगर हम जाग्रत हो जायं, तो अुनका अिस देशमें कुछ न चले। अभी हमने बहुत थोड़ा काम किया है, फिर भी हम ...जैसोंके दिल कुछ तो पलट ही गये हैं। वे ट्रस्टियोंके नाते अपने फर्ज — बहुत थोड़े ही सही — बजाने लगे हैं। यह सच है कि ये ट्रस्टीके नाते अपना कमीशन बादशाही ढंगसे लेते हैं, लेकिन धीरे-धीरे अुन्हें हम अिस बुराअीमें से भी हटा लेंगे। ...तो ट्रस्टी बन ही चुके हैं। और जब राज्यतंत्र पर आम जनताका काबू होगा, तब ये सब पूंजीपति जल्दी ही अपने फर्ज मंजूर कर लेंगे। अुस समय अुनके सामने जो फर्ज हम रखेंगे, अुनको अदा करना अुन्हें अच्छा लगेगा। लेकिन आज अगर अुन्हें भड़का दें, तो वे संगठित हो जायं और देशमें फासिस्टवाद कायम हो

जाय। मैंने सविनय कानूनभंगका आन्दोलन वन्द करके भी देशमें फासिस्टवादकी स्थापना होते रोकी है। अेक तरहसे तो हमारे देशमें फासिस्टवाद चलता ही है। लेकिन आज सारे धनी लोग अिसमें मिले हुअे नहीं हैं। जो मुझे अपना दोस्त समझते हैं, वे अैसे संगठनमें नहीं मिलते। मेरे खिलाफ क्या मिल सकते हैं?

"फासिस्टवादमें लोग दु:खी ही हों, अैसा कुछ नहीं है। हिटलरकी वात जाने दें, लेकिन मुसोलिनीके शासनमें अिटली पहलेके वनिस्वत ज्यादा सुखी तो है ही। वहांके जन-कल्याणके काम बड़े सुन्दर हैं। लोगोंको पहलेके वनिस्वत ज्यादा अच्छा खाने-पीनेको मिलता है और अुनका रहन-सहन भी पहलेसे ज्यादा अच्छा है। लेकिन यह सव किस काम का? लोगोंको वहां जरा भी आजादी है? मुसोलिनीकी नीतिका विरोध करनेवालेको मरा हुआ ही समझो। और अव तो अैसे लोगोंको मारना भी नहीं पड़ता। लोगोंको अिस हालतमें रहनेकी आदत हो गअी है, और वे अुसीमें सन्तोष मानते हैं। मुसोलिनीने हिटलरके वनिस्वत ज्यादा होशियारीसे काम लिया है। अुसकी सादगीका पार नहीं है। लेकिन अुसकी आंखें तो विल्ली जैसी हैं। अुसके सामने आदमी चौंधिया ही जाता है। मेरे लिअे तो अुसके सामने चौंधियानेकी कोअी वात नहीं थी, लेकिन अुसने सारी रचना अैसी कर रखी है कि अुससे मिलने जानेवाला डर जाय। मिलने जानेके लिअे जिस रास्तेसे जाना होता है, अुसके दोनों तरफ तरह-तरहकी तलवारें और अैसे ही दूसरे हथियार सजा दिये गये हैं। अुसके खुदके कमरेमें चित्र या दूसरी कोअी चीज नहीं मिलेगी। हथियार ही हथियार दिखेंगे। सिर्फ अुसके शरीर पर कोअी हथियार नहीं होते, लेकिन अुसकी आंखें मानो चारों तरफ घूमा ही करती हैं। और जिस तरह चूहा विल्लीकी आंखोंके तेजसे चौंधिया कर अुसके मुंहमें जा गिरता है, अुसी तरह लोग अुसके रुआवसे दव जाते हैं। हमारे यहां वंगालमें क्या हुआ है? अेण्डर्सन कहता है कि आतंकवादका मुकावला करनेके लिअे वह नरमसे नरम अुपाय काममें लेता है। लेकिन

अुन अुपायोंके पीछे जुल्म करनेकी संभावना तो रही हुअी है ही। फिर भी जब लोगोंको जुल्म या त्रास कम दिखाअी देता है, तब वह खटकता नहीं। और आज जो मनमानी बंगालमें चल रही है, अुसकी मानो लोगोंको आदत पड़ गअी है। जिस हालतमें लोगोंको कुछ बुरा नहीं मालूम होता। दार्जिलिंग बंगालियोंका कहा जाता था। अंग्रेज लगभग अुसे छोड़कर चले गये थे। लेकिन आज कोअी बंगाली वहां पासपोर्टके बिना दाखिल भी नहीं हो सकता। अैसी हालतमें लोग आर्थिक दृष्टिसे कभी सुखी हों, तो भी वह अच्छी नहीं है। हमारे देशमें फासिस्टवादका जिस तरहका खतरा सामने दिखाअी दे रहा है। धनी लोगोंको अपना मित्र बनाकर देशको अुस खतरेसे मैं बचा लेना चाहता हूं।

"अिसलिअे आम जनता पर काबू पानेकी हमारी कोशिशमें हमें साधनों पर काबू रखकर अुन्हें शुद्ध रखना है। आम लोगोंके हाथमें सत्ता आयेगी और अुस समय हमारा नेतृत्व होगा, तो किसानोंके कर्जका फैसला करनेमें हमें देर नहीं लगेगी।

"धनी लोगोंको ट्रस्टियोंके नाते अपने फर्ज मान लेना अच्छा लगेगा। अगर धन और शक्तिका दुरुपयोग न हो, तो हमारे देशकी कुदरती साधन-सम्पत्ति और आबहवा अैसी है कि वह दुनियामें सबसे ज्यादा सुखी हो सकता है।"

(हरिजनसेवक, २४-१०-'४८) नरहरि परीख

१६

सर्वोदय समाज

आप जानते हैं कि गांधीजीके निर्वाणके बाद सर्वोदय समाजका विचार लोगोंमें फैल गया है। जहां जाता हूं, लोग मुझसे पूछते हैं कि यह सर्वोदय समाज क्या है? अिसका संगठन कैसा है? मैं अुनको समझाता हूं कि वह सिर्फ संगठन नहीं है। वह तो अेक बड़ा क्रांतिकारी शब्द है। बड़े शब्दोंमें जो ताकत भरी रहती है, वह किसी संगठनमें नहीं रहती। शब्द तारनेवाले होते हैं, और शब्द मारनेवाले भी होते हैं। शब्दोंसे अुत्थान होता है, और शब्दोंसे पतन होता है। अैसे अेक बड़े शब्दका हमने अुपयोग किया है। वह शब्द क्या कहता है? हमें चन्द लोगोंका अुदय नहीं करना है, ज्यादा लोगोंका अुदय हमें नहीं करना है, ज्यादासे ज्यादा लोगोंके अुदयसे भी हमें सन्तोष नहीं है। हमें तो सबके अुदयसे ही सन्तोष होगा। छोटे-बड़े, कमजोर-ताकतवर, बुद्धिमान और जड़ सबका अुदय होगा, तभी हमें चैन लेना है। यही विशाल भावना हमें यह शब्द देता है।

लोग पूछते हैं: 'यह तो बड़े पैमाने पर काम करनेका ज़माना है। अिसमें आपके छोटे औजार क्या काम देंगे?' मैं कहता हूं, मुझे बड़ा नहीं, ज्यादा बड़ा नहीं, सबसे बड़ा पैमाना चाहिये। लेकिन बड़ा पैमाना किसे कहें, यह सोचनेकी बात है। मैं तो कहता हूं कि अिन छोटे औजारोंसे ही सबसे बड़े पैमाने पर काम होता है। क्योंकि अुनमें करोड़ोंके हाथ लग सकते हैं। मिलोंमें बहुत हुआ तो दस-बीस लाख हाथोंसे काम होगा, और अुतने ही लोगोंको खाना मिलेगा। लेकिन जिन औजारोंमें करोड़ों हाथ लग सकते हैं और जिनसे करोड़ोंको रोजी मिलती है, अुस कामको छोटे पैमानेका कहेंगे या बड़े पैमानेका? जैसे तुकारामने कहा है कि 'मेरा

धन और धान्य अितना थोड़ा नहीं है कि किसी बक्समें या कोठारमें समा सके। अिसलिअे वह हर घरमें रखा हुआ है। अितना बड़ा वैभव मेरा है।' अपने छोटेसे बैंक या ट्रंकमें भरे हुअे धनको जो बड़ा मानता है, अुसका दिल छोटा है। जिसका धन हर घरमें भरा है, वह विचारमें बड़ा है और दौलतमें दौलतमन्द है। बारिशकी बूंदका मुकाबला हौजमें भरे पानीसे करके जो बूंदको छोटी मानता है, वह ठीक ढंगसे विचार करना नहीं जानता। बारिशकी बूंद छोटी होती है, पर हर जगह गिरकर खूब पानी देती है। अिसलिअे वह छोटी नहीं है। यही ग्रामोद्योगोंकी क्रांतिकारी दृष्टि अिसमें है, जो बहुत बड़े पैमाने पर काम करना सिखाती है।

(हरिजनसेवक, २६-१२-'४८) विनोबा

१७

सर्वांगी ग्रामजीवनमें सर्वोदयका न्याय

जीवनकी सर्वांगी दृष्टिसे देखते हुअे खेती और दूसरे धन्धे करनेवाले लोग अेक-दूसरेसे बिल्कुल आजाद नहीं होने चाहियें। अेक धन्धा करनेवाला दूसरा धन्धा भी कर सके, या दूसरे धन्धोंकी कमाअीमें अुसकी भागीदारी हो सके, अैसी संभावना होनी चाहिये। और अिसे अुचित समझना चाहिये।

जमीनका मालिक अलग और जोतनेवाला अलग, और अुनके बीच मालिक व असामीका या सिर्फ मजदूरका अथवा सालियाना लगान देनेवालेका सम्बन्ध होनेमें और अुस सम्बन्धसे पैदा होनेवाले अन्यायके मूलमें अिस सर्वांगी दृष्टिका अभाव है।

काश्तकारकी मेहनतसे पैदा होनेवाली कमाअीमें जमीनके मालिकका हिस्सा तो पुराने ज़मानेसे अुचित माना जाता रहा है। लेकिन मालिकके

धन्धोंसे पैदा होनेवाली कमाअीमें से अुसकी कहलानेवाली जमीनको जोतने-वाले काश्तकारको कोअी लाभ नहीं मिलता।

अिस अन्यायको दूर करनेके लिअे पुराने मालिकका जमीन परका हक छीन लेनेकी दिशामें सुधार करनेकी वातें सोची जा रही हैं। अुससे कहा जाता है कि या तो वह पूरा किसान वन जाय, या विलकुल किसान न रहे।

लेकिन यह अुचित रचनात्मक कदमकी दिशा नहीं है।

हिन्दुस्तानके गांवोंकी सच्ची अुन्नतिके लिअे यह महत्त्वकी वात है कि कोअी भी आदमी सिर्फ काश्तकार, मवेशी चरानेवाला, साहुकारा करने-वाला या दुकानदार न हो। अधिकतर ये तीनों धन्वे वारहों महीने और चौवीसों घण्टे अेकसे नहीं चलते। अिसके वदले अगर ये वारहों महीने अेकसे चलनेवाले धन्धे वन जायं, तो भी यह जरूरी है कि ये तीनों धन्धे-वाले लोग कोअी न कोअी कारीगरीके धन्धे भी करते रहें। सिर्फ काश्त-कारी करनेवालेका पूरा विकास नहीं होता। और सिर्फ व्यापार करनेवाला या कारीगरी करनेवाला (गांवकी तरफसे जमीन देकर वसाया हुआ कारीगर) दिलका कमजोर वन जाता है।

गांवोंको कारीगरोंकी जरूरत थी। अिसलिअे वहां कारीगर वर्ग पैदा हुआ। गांवके लोगोंने अुन्हें वाहरसे ला-लाकर और जमीनें देकर अपने यहां वसाया। अुन्हें व्यापारीकी जरूरत होनेसे वे व्यापारीके वशमें होते गये, अथवा अुनमें से होशियार लोग खुद व्यापारमें लग गये और काश्तकारी छोड़कर सिर्फ जमीनके मालिक वन गये। पहले ये लोग मजदूरी देकर और वादमें सालाना ठहराव पर काश्तकारोंसे खेती कराने लगे।

अिस तरह मेहनतका वंटवारा तो हुआ, लेकिन अिसमें कमाअीके वंटवारेकी अैसी पद्धति पड़ गअी कि व्यापारीके धन्धेमें दूसरे किसीको भाग न मिलता, लेकिन अुसे तो जमीनसे भी और कारीगरीसे भी लाभ मिलने लगा। जमीनके मालिककी दूसरी आमदनीमें दूसरे किसीका

भाग नहीं, लेकिन अुसे तो जमीन जोतनेवाले मजदूर या असामीकी मेहनतसे भी हिस्सा मिलता और कारीगरको थोड़ा पैसा देनेसे अुसकी कुशलताका भी लाभ मिलता था।

साझाना करार पर जमीन जोतनेवाले काश्तकारको भी मजदूर और कारीगरको थोड़ा हिस्सा देने पर अपनी मेहनतका बदला मिल जाता था।

सिर्फ मजदूर और गांवमें जमीन देकर बसाये हुअे कारीगरोंको ही कमसे कम लाभ मिलता और मेहनत वे ज्यादासे ज्यादा करते थे।

अब अिस हालतमें सुधार करनेकी जो कोशिश चल रही है, अुसमें सिर्फ जमींदार और "बिचले वर्ग" यानी दुकानदार या दलालको निकाल फेंकने, कारीगर और काश्तकारको स्वतंत्र बनाने और मजदूर व कारीगरको स्वतंत्र रखकर खेती और अुद्योगोंमें अुन्हें हिस्सा दिलानेकी कोशिश है। बड़े अुद्योगोंको रोकनेकी किसीकी हिम्मत नहीं है, अिसलिअे बड़े व्यापारियोंका तो राष्ट्रकी अर्थव्यवस्थामें अच्छा ही स्थान बना हुआ है।

संयुक्त हिन्दू परिवारकी प्रथा खूनके सम्बन्ध पर कायम की गअी थी। अेक समय दो सौ या पांच सौ आदमियोंवाले संयुक्त हिन्दू परिवार थे। जिनमें मजदूर, खेतीकी देखरेख करनेवाले, मवेशी संभालनेवाले, बाजार-हाट करनेवाले और कारीगरी करनेवाले सब अेक ही परिवारके लोग होते थे और सबकी कमाअीमें हरअेकका हिस्सा होनेकी मान्यता थी। लेकिन यह व्यवस्था अिस रूपमें टिक नहीं सकी और टूट गअी। अुसका फिरसे अुसी रूपमें कायम होना संभव नहीं है। लेकिन अुसमें रहनेवाली संयुक्त मेहनत और संयुक्त लाभकी बात बड़े महत्वकी है। अिस चीजका लाभ अब बहुविध (मल्टी-परपज) सहकारी संस्थाओं द्वारा ही लिया जा सकता है।

सब कानूनों और सुधारों पर अिस तरह विचार करना चाहिये कि वे अैसी सहकारी संस्थाअें कायम करनेमें मदद पहुंचा सकें।

लगान-कानूनके बारेमें भी अिसी तरह विचार करना चाहिये।

जमीनका नामधारी मालिक, खुद खेती करनेवाला या सालाना ठहराव पर दूसरेकी जमीन जोतनेवाला काश्तकार, जमीनका मजदूर, गांवके कारीगर, गांवका दुकानदार और गांवके साथ सम्बन्ध कायम रखते हुअे दूसरे गांव या परदेश जाकर वहांसे कमाकर लानेवाले धन्धे-दार वगैरा सब अिस तरहके भागीदार बनें, जिससे अेककी कमाअीमें दूसरे हरअेकका हिस्सा हो, और सबको जीवन-वेतन तो मिलता ही हो। अिस तरहकी सर्वांगी सहकारी संस्थावाले जीवनकी तरफ जनताको मोड़ना चाहिये।

जमीनका मालिक मालिक बना रहना चाहता है। लेकिन अगर अुसकी दूसरी कमाअीमें जमीनके मजदूर और सालाना ठहराव पर खेती करनेवालेको भी अेकसा हिस्सा मिले, तो अिस तरहके मेहनतके बंटवारेमें कोअी बुराअी नहीं है।

व्यापारी या दुकानदार अपनी बचाअी हुअी पूंजी जमीन या अुद्योगमें लगाना चाहता है और सालाना ठहराव पर खेती करनेवाले काश्तकार या कारीगरकी कमाअीमें से हिस्सा लेना चाहता है। अगर अुसकी दुकानके नफेमें से अैसे काश्तकार या कारीगरको भाग मिले, तो सालाना लगान या मजदूरीसे खेती करने देनेमें कोअी अन्याय नहीं होगा।

परिवारके साहसी और होशियार आदमी देश-विदेश जाकर पैसा कमाते हैं। अुसमें घर रहनेवाले कुटुम्बियोंको हिस्सा मिलता है, और घरकी कमाअीमें बाहर जाकर पैसा कमानेवालोंको हिस्सा मिलता है। अिसी तरह पूरे गांवके साथ या अिनके असामियों, मजदूर वगैरा सबके साथ हो, तो असामी, मजदूर वगैरा किसीको अिनके साथ अीर्ष्या या जलन न हो। अुलटे वे लोग अिनके साहसका स्वागत करेंगे। यह सहकारी पद्धतिसे ही हो सकता है। फिर "बैठकर खानेवाला" विशेषण ही किसीको न लगाया जायगा।

पचास अेकड़ जमीनके बदले सौ दो सौ अेकड़ जमीन अेक साथ जोती जाय, पांच-दस जानवरोंके बजाय पचास-पौन सौ जानवर अेक साथ पाले जायं, तो बहुत लाभ होगा। सहकारी खेती और सहकारी गोपालनके जरिये अैसा किया जाय, तो अिससे नुकसान नहीं, लाभ ही होगा।

अगर नये लगान-कानूनसे अैसी सहकारी संस्थाको बढ़ावा न मिले, तो अुसकी अिस खामीको सुधारना चाहिये।

अुस कानूनमें अैसा तत्त्व होना चाहिये, जिससे आज तक जो जमीनके मालिक माने जाते रहे हैं, अुनमें खेतीमें ज्यादा रस लेनेकी अिच्छा पैदा हो। वे खुद खेती करनेकी तरफ और शहरोंसे अपने गांवोंकी तरफ मुड़ें, गांवमें आकर खेतीमें रस लें और अुसमें धन लगावें; साथ ही साथ वहां अुद्योग-धन्धे भी बढ़ावें और अुनमें खेतीके मजदूरों, असामियों, कारीगरों वगैरा सबको सहकारी पद्धतिके अनुसार हिस्सा देनेकी वृत्ति अुन लोगोंमें पैदा हो।

किसान जमीनको आसानीसे नहीं छोड़ता, और न छोड़नेवाला है। वह कायदेको बुरे रास्ते ले जाय, अिसके बदले कायदा अुसे न्याय और सर्वोदयके रास्ते मोड़े, यह ज्यादा अच्छा है।

(हरिजनसेवक, १७-१०-'४८) कि० घ० मशरूवाला

१८

सर्वोदय विचारका सर्वांगपूर्ण स्वरूप

१२ मार्चके दिन व्यापारी संघके वार्षिक अधिवेशनके अवसर पंडित जवाहरलालजीका अेक विस्तृत भाषण हुआ था। अुसमें अुद्योगोंका महत्त्व दर्शाते हुअे अुन्होंने कहा था:

"हम सबको अैसे मनुष्य-प्राणीके साथ व्यवहार करना पड़ता है, जो रक्त-मांसका बना हुआ होता है और अितना ही नहीं बल्कि अिन दिनों अुत्तेजित और विकारवश होनेवाले मनसे भी भरा हुआ है। अिसका खयाल रखकर ही सारी बातों पर विचार होना चाहिये। फिर चाहे वह क्षेत्र औद्योगिक हो, किसान-मजदूरोंका हो, या अन्य कोअी हो। सरकारको अैसे मानवी जीवोंके साथ व्यवहार करना पड़ता है, अुनका भला करना पड़ता है। अितना ही नहीं बल्कि भला हो रहा है, अैसा अुनको महसूस कराना पड़ता है और अिससे भी बढ़कर अुस काममें अुनको शरीक करना पड़ता है। फिर भी बात अैसी है कि सरकार जनताका तभी भला कर सकती है, जब जनता खुद अपना भला करे। डोल (बिना काम किये दी जानेवाली मदद) आदि देकर आप अुसका भला नहीं कर सकते। हम अेक तरफ अुत्पादन बढ़ाना चाहते हैं और दूसरी तरफ लाखों लोग बेकार पड़े हैं। यह तो तर्कविरोधी-सी बात दिखती है। जो बेकार है, अुसे कहीं न कहीं कुछ अुत्पादन करना ही चाहिये। क्योंकि आखिर वह खाता तो है ही। आप कहेंगे — 'हमारे पास पर्याप्त यंत्र-सामग्री नहीं है।' बात तो ठीक है। यहां पर ही वह चीज आती है, जिस पर गांधीजी जोर देते थे। बेकार मनुष्यके पास काम करनेके लिअे

कोअी छोटी-बड़ी मशीन भले न हो, लेकिन वह जहां-कहीं भी होगा, अकेला या सामूहिक रूपसे कुछ न कुछ अुत्पादक काम हमेशा कर सकता है। अैसी व्यवस्था आदर्श समाज-रचनामें होती है। और अर्थशास्त्री आपको कहेगा कि अिस मनुष्यका काम स्वल्प नहीं है। क्योंकि जब लाखों लोगोंका हाथ अुसमें लगता है, तब वह अेक बहुत बड़ी चीज बन जाती है।

"अिसलिअे हमारा औद्योगीकरण हम कितना भी शीघ्र क्यों न बढ़ायें, फिर भी हमारे लाखों-करोड़ोंको अुसमें हम कैसे काम दे सकेंगे, यह मेरी समझमें नहीं आता है। हमारे कारखानोंमें बहुत हुआ तो दो करोड़, तीन करोड़ या अुससे भी अधिक लोग काम करेंगे। फिर भी जो बचेंगे अुनका क्या? गृह-अुद्योग यानी छोटे पैमाने पर या सह-कारी पद्धतिसे चलनेवाले अुद्योग खड़े करके जब तक आप बेकारोंसे काम नहीं लेंगे, तब तक अुनका पूरा अुपयोग आप नहीं कर सकेंगे।"

यह अेक बहुत ही महत्त्वका विचार है। और ठीक वैसे ही रखा गया है, जैसे सर्वोदयके विचारक रखना चाहेंगे। लेकिन जैसे कांग्रेसमें कोअी मांगलिक विचार बोलनेका रिवाज है, वैसा ही हाल अिसका हुआ। यानी वह सुना गया और अुस पर कोअी चर्चा नहीं हुअी। अितना ही नहीं, बल्कि अुसी अधिवेशनमें श्री घनश्यामदासने विरुद्धाने आर्थिक परिस्थितिके सम्बन्धमें अेक प्रस्ताव पेश करते समय अिसका स्पष्ट शब्दोंमें खंडन भी कर दिया। अुन्होंने कहा:

"केवल आधुनिक कल-कारखानोंकी मददसे ही पूर्ण जीविकोपार्जनकी व्यवस्था और देशकी समृद्धि कायम की जा सकती है। वैसे तो चरखे और सर्वोदयकी विचारधारा भी पूर्ण जीविको-पार्जनकी व्यवस्था कर सकती है, परन्तु लोग यदि चरखेको अपना

लें, तो अुनका जीवन-मान आखिर कितना होगा? प्रतिदिन चार आनेसे अधिक नहीं और वह भी 'अत्यन्त सन्देहजनक' ही है।"

सर्वोदय-विचारधाराका अितने स्वल्पतम शब्दोंमें खंडन मैंने और कहीं नहीं देखा था। सर्वोदय-विचारधारा पूर्ण जीविकोपार्जनकी व्यवस्था कर सकती है, अितना तो खंडन करनेवालेको भी मानना पड़ा है। लेकिन अुस व्यवस्था पर जो अभिप्राय प्रगट किया है, वह अगर सही है, तो सर्वोदय-विचारधारा सबके जीविकोपार्जनकी नहीं, बल्कि मरणोपार्जनकी व्यवस्था करती है, अैसा अुसका मतलब है और यही टीकाकारका आशय ह।

बापू हमेशा चरखेको सूर्यकी अुपमा देते थे और अुसके अिर्द-गिर्द कृषि, गोरक्षण, ग्राम-अुद्योग आदि ग्रहमालाकी वे कल्पना करते थे। बिड़लाजीसे बापूका निकट परिचय था, अिसलिअे बापूकी समग्र दृष्टिकी यह बात अुनको भलीभांति मालूम है। अिसलिअे अिस टीकामें चरखे और सर्वोदयकी विचारधाराको जोड़ दिया है, जो सर्वथा अुचित है। लेकिन खंडनमें चरखे पर अलगसे प्रहार किया है। खंडनकी सहूलियत तो कुछ अिसमें हो ही जाती है, लेकिन विषयको न्याय नहीं मिलता।

जहां पैसेका कोअी स्थिर मूल्य नहीं रहा है, वहां पैसेकी भाषामें परिश्रमकी कीमत आंकना ही गलत है। लेकिन फिर भी मैं अितना तो यहां सहज कह दूं कि हमारे केन्द्रोंमें चरखा चलानेवाली बाअीको "अत्यन्त सन्देहजनक" चार आने नहीं, बल्कि निश्चित आठ आने तो मिलते ही हैं। लेकिन जैसे कि मैं अभी लिख चुका, अिस तरहका मूल्य-मापन ही अशास्त्रीय है। मुझसे जब किसीने पूछा था कि "क्या चरखेसे पूरा अुदरपोषण हो जाता है?" तो मैंने जवाब दिया था कि चरखेसे न पूरा अुदरपोषण होता है, न अधूरा होता है। अुससे अुदर-पोषण ही नहीं होता। अुदर-पोषण तो अनाज, तरकारी, दूध, फल आदिसे होता है। चरखेसे कपड़ा मिलता है, कामके समयका अेक छोटासा हिस्सा अुसमें देना पड़ता है और अुस काममें अर्थशास्त्री जिनको सक्षम

मजदूर कहते हैं अुनका ही नहीं, बल्कि जिनकी गिनती वे अदममें करते हैं, अुनका भी अुपयोग होता है। अिसलिअे चरखेको मैं वस्त्रपूर्णादेवी कहता हूं। खेती अन्नपूर्णा है। जहां मैंने वस्त्रपूर्णा शब्दका प्रयोग किया, वहां मैंने अुनकी आजकी हिन्दुस्तानकी मिलोंसे तुलना भी कर ली, क्योंकि हमें जानना चाहिये कि हिन्दुस्तानकी मीलें जहां महायुद्धके पहले प्रति व्यक्ति १७ वर्गगज कपड़ा देती थीं, वहां वे आज केवल ११ वर्गगज दे रही हैं। अितनी सारी पूंजी, अितना बुद्धि-कौशल्य और अितनी यंत्र-विद्याकी प्रगतिके बावजूद यह हालत है। मेरा दावा है कि चरखेकी अैसी दरिद्र दशा नहीं है।

लेकिन चरखेके साथ कृषि, गोरक्षण, ग्राम-अुद्योग, ग्राम सफाअी, निसर्गोपचार और नअी तालीम आदिको जब जोड़ देते हैं, तो जो सर्वांग-पूर्ण जीवन बनता है, अुसकी अुपेक्षा करके हिन्दुस्तानको सिवा खतरेके और कोअी लाभ नहीं हो सकता। आज हमारी सरकारकी चौसठ प्रति-शतसे अधिक आमदनीका व्यय हो रहा है — लश्कर पर। अिसकी जिम्मे-दारी आज तो हिन्दुस्तान और पाकिस्तानके वैमनस्य पर डाली जा रही है। यह समस्या मिट गअी तो भी जब तक ग्राम-अुद्योगी अर्थ-व्यवस्था नहीं होती है, तब तक अैसी ही दूसरी समस्याअें खड़ी रहेंगी और सरकारके ध्यानका मुख्य विषय लश्कर ही रहेगा। जैसे कि हम सब देशोंकी सरकारोंकी हालत देख रहे हैं। अिसलिअे समझना चाहिये कि सर्वोदयकी व्यवस्था ही जीविकोपार्जनकी व्यवस्था है और अन्य व्यवस्था मरणोपार्जनकी व्यवस्था है।

(हरिजनसेवक, १०-६-'५०) विनोबा

१९

सर्वोदय दिन

आज शुक्रवार है। गांधीजीके प्रयाणका दिन। हिन्दुस्तानमें कअी जगह अिस निमित्त सामुदायिक प्रार्थना होती है। परमात्माकी प्रार्थना रोज होनी चाहिये। परिवार परिवारमें, समूह समूहमें। परन्तु अगर व्यावसायिकोंसे यह रोज नहीं वन पड़ता हो, तो क़मसे कम सप्ताहमें अेक वार तो सव मिलकर भगवानका भजन करें।

आज तो मैं और ही कुछ कहनेवाला हूं। अिस माहकी तीस तारीखको गांधीजीका प्रयाण दिन आता है। अुस दिन अुनको गये अेक वर्ष पूरा होता है। अुस दिन सारे देशमें, हर गांवमें कुछ न कुछ कार्यक्रम होगा। होना जरूरी भी है। महापुरुषोंके स्मरणसे हम जैसे सामान्य जनोंको सहारा मिलता है। अैसे पावन स्मरणोंका जितना भी संग्रह हो सके अच्छा ही है। लेकिन मैं अुस दिवसको गांधी-स्मरण दिन कहनेके वजाय सर्वोदय दिन कहना पसन्द करता हूं। क्योंकि आखिर ज्यादा लाभ अिसीमें है कि हमारी दृष्टि व्यक्तिके वजाय विचार पर स्थिर हो। कुछ ही रोज पहले मैं दादू समाजमें गया था। वहां मैंने अुन लोगोंसे तव कहा था कि दादूका नाम मिट जाय, भगवानका नाम रहे। यही मैं यहां भी कहूंगा। गांधीजी अिस वारेमें विशेष चिन्तित रहते थे। अुनकी वरसगांठको लोग गांधी जयन्ती कहते थे। गांधीजीने अुन्हें समझाया था कि 'तुम अुसे चरखा जयन्ती कहो, ताकि अेक विचार तुम्हारे समीप रह जाय।' अफ्रीकासे लिखा हुआ अुनका अेक पत्र अभी-अभी मेरे देखनेमें आया है। अुसमें वे लिखते हैं—'मेरा नाम मरेगा, तभी मेरा काम वढ़ेगा।' ज्ञानदेवने भगवानसे याचना की है—"रहे न कीरत मेरी, दान यह हरि दीजियो।" ज्ञानेश्वरीमें भी अुन्होंने "लोपहु मम नाम रूप" यह आकांक्षा

प्रगट की है। विचार जियें। व्यक्ति तो मरने ही वाला है। अगर अैसा नहीं हुआ और व्यक्ति ही बच रहा, तो हम भ्रममें रहेंगे, संकुचित पंथ बनायेंगे और समाजके टुकड़े करेंगे। जिस तरह आज ही हिन्दुस्तानमें पांच-सात अवतार हैं और भक्तोंने अुनके जीवनकालमें ही अुनकी पूजा शुरू कर दी है। जिसमें श्रेय नहीं।

गांधीजी खुदको सामान्य मनुष्य मानते थे। मिठास जिसीमें है कि अुन्हें वैसा ही रहने दिया जाय। हमारे लिअे अुनमें बहुत बोध पड़ा है। नाम ही अगर लेना है, तो शरीरको हत्यारेकी गोलीका स्पर्श होते ही गांधीजीके मुखसे जो नाम निकला, वही क्यों न लिया जाय। जिसलिअे अुनके स्मरण-दिनको मैं सर्वोदय दिन कहना चाहता हूं। वैसे यह दिन अगर क्रियाशील चिन्तनमें बिताया जा सके, तो बड़ा काम बन सकता है। अुस रोज कुछ अमली कामकाज होना चाहिये। निष्क्रियता हमारे जीवनमें काफी है। कर्म द्वारा अुपासना — जो सब धर्मोंकी शिक्षा है, लेकिन जिसे हम भूल गये हैं, और जो गांधीजीके जीवनमें समा गअी थी — हमारे जीवनमें अुतरनी चाहिये। जिसलिअे मैं सुझाअूंगा कि अुस रोज सार्वजनिक सफाअीका काम सब लोग करें। सब मेहतर बनें और सारा देश शीशेकी तरह स्वच्छ करें। मेहतरोंको अछूत मानकर हमारे देशने बहुत बड़ा पाप किया है। और देशभरमें अैसी गन्दगी कर रखी है, जिसकी मिसाल दूसरे किसी सभ्य देशमें मिलना संभव नहीं है। हमें जिसका प्रायश्चित्त करना चाहिये। छोटे-बड़े सब विनम्र बनें। "सबसे नीच वही मैं', जिस भावनासे यह सेवाका काम किया जाय।

अुसी तरह जिस देशके लिअे अुत्पादनकी बहुत आवश्यकता है। अिसलिअे यह जरूरी है कि सब लोग चरखा अवश्य चलायें। और प्रेम-सूत्रमें सबके अन्तःकरण बंध जायं। जो बहुत ही बीमार हैं अुन्हें अगर छोड़ दिया जाय, तो यह काम अैसा है कि जिसे छोटे-बड़े सब सहजमें कर सकते हैं। जिसलिअे अुत्पादन कार्यके तौर पर कताअी हो।

ये दो अमली काम हुअे। अिसके अलावा, सामुदायिक प्रार्थना हो, जिसमें सब जमातोंके लोग शरीक रहें और वहां परमेश्वरके नाम पर सब हृदय अेकमय और शुद्ध बनें। संभव हो तो व्रत रखा जाय, ताकि शुद्धिमें मदद मिले।

अिस कार्यक्रमके साथ-साथ सर्वोदयकी भावनाका चिन्तन भी हो। चिन्तन अनेक प्रकारसे हो सकता है। यह शब्द अैसा महान है कि जितनी गहराअीमें पैठना हो, पैठा जा सकता है। हमें विशिष्टोंका अुदय नहीं साधना है, सबका अुदय साधना है। यह हुआ अेक चिन्तन। किसीके हितका दूसरे किसीके हितके साथ विरोध नहीं रह सकता। हित सबके अविरोधी हैं। सात्त्विक, राजस, तामस भेदोंके अनुसार सुख और सुखमें भेद रह सकता है, पर हितोंमें वैसा नहीं रहता। यह दूसरा चिन्तन। मैं सबमें हूं और मुझमें सब हैं। अिसलिअे मेरा कर्तव्य है कि मैं सबकी सेवामें शून्य हो जाअूं। यह तीसरा चिन्तन। अिसमें से नतीजा निकलता है कि अिस सबकी साधनाके लिअे सत्यका व्रत लेना जरूरी है, और अिस बातकी फिक्र रखनी भी जरूरी है कि किसी पर हम आक्रमण न करें। हमें संयम सीखना होगा। अिस तरह विविध प्रकारसे सर्वोदय चिन्तनमें वह दिन बीते।

परमेश्वरकी हमारे देश पर बड़ी कृपा है कि अुसने बिलकुल प्राचीन कालसे आज तक असंख्य सत्पुरुष यहां भेजे। मानो अुनकी अखंड माला ही अुसने जारी रखी। अैसे अभागे समयमें भी हिन्दुस्तान पर अुसने सत्पुरुषोंकी वर्षा की। अगर हम अपने हृदय खुले रखें, तो वे सत्पुरुष हमारे हृदयमें जन्म लेंगे। और हमारा ही रूपान्तर हो जायगा। भगवान चाहेंगे, तो क्या नहीं होगा?

(हरिजनसेवक, २३-१-'४९) **विनोबा**

२०

सर्वोदय समाज और सर्व-सेवा संघ

सर्वोदय-समाज अेक विशाल समुद्र है। अिसकी गहराअीका हमें अभी पता नहीं है। अितना मालूम है कि वह अमृतका समुद्र है। अिसलिअे अुसमें डूबनेका डर नहीं है। निःसंकोच तैर सकते हैं। तैरनेके लिअे सब दिशाअें खुली हैं, चाहे अकेले कूद पड़ो, चाहे दस-बीस मिलकर कूद पड़ो। चाहे अूपर तैरते रहो या भीतर ही गोता लगाओ। किसीका भी खेल कर सकते हो।

सर्वोदय-समाजका हरअेक सेवक सर्व-तंत्र-स्वतंत्र है। अुसको कोअी कैद नहीं है। वह अपनी जगह अकेला काम कर सकता है, सम्मिलित काम कर सकता है; जरूरत समझे तो संगठित भी कर सकता है। अनेक काम सूचित किये गये हैं, अुनमें से कोअी भी अेक या अनेक काम अपनी शक्तिके अनुसार हाथमें ले सकता है। या और भी अुसी तरहके दूसरे काम भी — जो अुसको सूझें, जिनके लिअे वह अपनी काबिलियत समझे, जो अुसे रुचिकर मालूम हों — कर सकता है। रचनात्मक काम करनेवाली अखिल भारतीय प्रतिष्ठित संस्थाअें अुसकी मददके लिअे तैयार हैं। सर्व-सेवा-संघके नामसे अब ये सारी सम्मिलित हो चुकी हैं। अुस संघकी मदद वह ले सकता है। अुसकी मददके बिना भी वह आगे बढ़ सकता है। ज्ञानियोंकी सलाह ले सकता है, अुस पर अमल कर सकता है, अुससे भिन्न प्रयोग भी कर सकता है। सेवकके नाते वह अपना नाम सर्वोदय-समाजके दफ्तरमें लिखवा सकता है, न भी लिखवा सकता है। सालाना अेक सम्मेलन होगा, अुसमें वह अपनी अिच्छासे आ सकता है, अुसे कोअी रोकेगा नहीं। वह नहीं भी आ सकता है। आनेके लिअे अुसे कोअी मजबूर नहीं करेगा। अगर वह

सर्वोदय-विचारको अमलमें लानेके लिअे अपने मनसे कुछ करता है, तो अुसके सेवकत्वका कोअी अिनकार नहीं कर सकता। सेवकके नाते अुसको कोअी हक हासिल नहीं है, कर्तव्य सारे हासिल हैं। अुन कर्तव्योंका पालन करनेमें वह हर किसी सज्जनका सहकार ले सकता है। चाहे वह सज्जन किसी भी पार्टी या पक्षका हो। वह अेक ही चीज नहीं कर सकता। वह सत्य और अहिंसाको नहीं छोड़ सकता। यही अुस सर्वोदय-समुद्रका अमृत है।

सेवाग्राममें हमने तय किया था कि हम कोअी पक्ष या वाद नहीं खड़ा करना चाहते, बल्कि सारे समाजमें घुल-मिलकर अुसे अपना रूप देंगे। अपना रूप, यानी अपने विकारों या अहंकारका रूप नहीं, बल्कि सर्व-अभिमान-वर्जित परिशुद्ध आत्माका रूप, जो सर्वान्तरात्मा है, सर्व-व्यापक है; जाति, देश, पंथ, कुल, वर्ण और रंगके परे है। वही हमारा रूप होगा और अुसीका रंग हम दुनियाको देना चाहेंगे। अुसके लिअे सबकी और सब तरहकी सेवा करनी होगी। अुसका विचार करके राअूमें हमने सर्व-सेवा-संघ कायम किया। अभी अनुगुलमें सर्वोदय-समाज और सर्व-सेवा-संघका नाता हमने जोड़ दिया। दोनोंका सम्बन्ध और दोनोंका भेद अधिक विशद करनेकी कोशिश हुअी। अिस कोशिशके कारण कुछ लोगोंके दिलमें विचार विशद होनेके बजाय अधिक धुंधला हुआ। खुली चर्चा चली। अुसका कभी-कभी अैसा परिणाम होता है।

लेकिन विचार अत्यन्त विशद है। अुसे समझनेमें कोअी कठिनाअी नहीं है। सर्वोदय-समाज अेक वैचारिक मंडल है। सर्व-सेवा-संघ विशेषज्ञोंकी अेक आयोजनाकारी और कार्यकारी अखिल भारतीय संस्था है। और सर्वोदय-समाजका हरअेक व्यक्ति अेक सर्वाधिकारी सेवक है। सर्वाधिकार और सेवकता, दोनोंका जहां योग होता है, वहां सहज ही सब दोषोंका निरसन और सब गुणोंका आवाहन होता है।

अेक भाअीने कहा: "वैसे मेरी सर्वोदय-समाजके साथ पूरी सहानुभूति है, लेकिन मैं अुसमें अिसलिअे दाखिल नहीं होता कि अुसमें

राजकारण नहीं है और अिन दिनों बिना राजकारणके कोअी सामाजिक क्रांति हो नहीं सकती।" मैंने कहा: "अिसमें आपने तीन कथन किये हैं और तीनोंके मूलमें भ्रम रहे हैं। अेक तो आपने यह समझा कि सर्वोदय-समाजमें दाखिल होना पड़ता है। अैसी बात नहीं है। जो सर्वोदय-विचारमें मानता है, वह सर्वोदय-समाजमें है ही। जो नाम दर्ज करायेगा, वही सर्वोदय-समाजका सेवक होगा, अैसी कल्पना नहीं है। नाम तो दर्ज होंगे चन्द हजारोंके, लेकिन हम आशा करेंगे कि समाजके अलिखित सेवक होंगे लाखों! जिनके नाम दर्ज नहीं होंगे, वे अगर कहते हैं कि 'हम सर्वोदय-समाज' के हैं, तो वे हैं। दूसरी बात आपने यह मानी कि सर्वोदय-विचारमें राजकारण नहीं है। केवल सत्ताका लोभ रखनेवाला अदूरदर्शी राजकारण अुसमें नहीं है। क्योंकि वैसा राजकारण सर्वोदय-कारी नहीं होता, स्वार्थी या स्वकीयार्थी होता है। तुलसीदासजीका अेक बहुत ही मार्मिक वचन है कि 'अपना भला चाहनेवाले तो सब होते हैं, अपनोंका भला चाहनेवाले भी कुछ होते हैं, लेकिन सबका भला चाहनेवाले तो हरि-चरणोंके दास ही होते हैं।' हरि-चरणोंके दास विशिष्ट पक्षके राजकारणको पसन्द नहीं कर सकते। शक्ति-क्षयकारी राजकारण, फोड़नेवाला राजकारण अुनका नहीं होता, लेकिन सबको जोड़नेवाला, सबकी शक्तिका वर्धन करनेवाला अुनका अेक राजकारण होता है। तीसरा आपका यह खयाल दीखता है कि आधुनिक जमानेमें सामाजिक क्रांति राजकारणके आधार पर ही हो सकती है। भावी कालको न पहचाननेके ये लक्षण हैं। अेककी सत्ताके दिन गये, अल्पसंख्याकी सत्ताके दिन गये, बहुसंख्याकी सत्ताके दिन भी जा रहे हैं, और अब सबकी सत्ताके दिन आ रहे हैं। मैं जो देखता हूँ, वही देखता हूं। सबकी सत्ता यानी सबके सिर्फ वोट नहीं, हार्दिक सहकार। सबमें मैं हूं और मुझमें सब हैं, अिस अनुभूतिकी सत्ताका युग आ रहा है। अुसके अनुकूल हम हुअे तो हमें यश मिलेगा। नहीं तो हमारे बावजूद भी वह आयेगा। यह विचार-क्रांतिकी बात है। विचारक्रांति किसी भी युगमें राजकारणकी दासी नहीं

हो सकती, अिस युगमें भी नहीं। दीखनेमें तो यों दीखेगा कि सत्ता हाथमें आयी तो फौरन फर्क कर देंगे, अपनी मर्जीके मुताबिक शिक्षण चलायेंगे और सबके दिमाग अपने विचारोंसे भर देंगे। लेकिन यह निरा आभास है। ताशका बंगला जैसे बनता है, वैसे ही गिरता है। जहां राजकीय सत्ताने शिक्षण पर काबू चलाया और सबको अेक विचारवाले, यानी स्वतंत्र-विचार-शून्य बनाया, वहां अुस सत्ताके सम्पूर्ण अुच्छेदकी तैयारी हो गअी। अेक हवाका झोंका आया, और मीनार गिर पड़ा।"

सर्वोदय-विचारकी खूबी ही यह है कि वह स्वतंत्र और भिन्न-भिन्न विचारोंकी गुंजाअिश रखता है; विशिष्ट व्यवस्था, या विशिष्ट बाह्य आकारका आग्रह नहीं रखता। वह शिकंजेको नहीं मानता। ढांचा बनाना नहीं चाहता। वह संगठनको शक्ति नहीं मान बैठता, बल्कि सत्यकी शक्ति पहचानता है। अशक्ति संगठित हुअी कि शक्ति बन गअी, अैसे आभासमें वह नहीं फंसता। यह अेक शक्तिमान बननेका आसान तरीका आलसी लोगोंने ढूंढ़ लिया है। बीमारोंके संग्रहसे ही अगर आरोग्य बनता, तो न वैद्योंकी जरूरत रहती, न दवाअियोंकी और न पौष्टिक अन्नकी। हिंसामें यह सब चल जाता है। दस लाखकी फौज खड़ी की, और हो गया सारा राष्ट्र बलवान! सिपाहियोंकी जीत हुअी तो कहते हैं, देशकी जीत हुअी। लेकिन सिपाहियोंको भोजन मिला, तो यों नहीं कह सकते कि देशको भोजन मिला। कहते हैं: "संघे शक्तिः कलौ युगे।" लेकिन पहचानते नहीं कि कलियुग अब है नहीं। अब है कृत-युग, कृति-युग, सत्कृति-युग। कलि-युग तो कबका खतम हुआ। जब मैं जाग गया, तो कलि-युग कहां रहा? अिसलिअे लड़ाअी जीतकर या चुनाव जीतकर भी हम सर्वोदय लायेंगे, अैसे भ्रममें हमें नहीं रहना चाहिये।

संघटनामें सर्वोदय क्यों नहीं पड़ता अिसकी यह दृष्टि है। मैंने कहा कि सर्वोदयका सेवक हर काम करनेके लिअे मुक्त है। अगर वह जरूरत समझे तो स्थानिक संघटना भी कर सकता है। वह विचार-निष्ठ संघटना होगी। अुसमें हरअेक व्यक्तिका हरअेक व्यक्तिसे पूर्ण

परिचय होगा। अुसमें दंभके लिअे गुंजािअश नहीं रहेगी। अुसमें अभिमानका प्रवेश नहीं होगा। जहां छोटे पैमाने पर अेक चीज बनती है, वहां अिन दोषोंको टालना मुकर होता है। लेकिन दंभ और अभिमान अैसे सूक्ष्म दोष हैं कि वे कहीं भी प्रवेश कर सकते हैं। अगर सेवक देखेगा कि अुसकी छोटी-सी संघटनामें भी ये दोष घुस रहे हैं, तो वह अुस संघटनाको तोड़ेगा। वह अैसा मौका ही नहीं आने देगा। लेकिन वह जो भी करेगा, अुसकी सारी जिम्मेदारी अुसकी निजकी होगी। अपनी जिम्मेदारी समझकर वह करेगा और भरेगा।

सर्वोदय-समाजका स्वरूप और सर्वोदय-समाजके सेवकके व्यक्तिगत कर्तव्य अिस तरह स्पष्ट होने पर सर्व-सेवा-संघ अिनके बीचमें कहां बैठता है, यह समझ लेना चाहिये। सर्व-सेवा-संघ सर्वोदय-समाजके सेवकको सलाह और मदद देनेवाली अेक सम्मिलित संस्था है। वह अेक संघटना जरूर है। लेकिन वह मनुष्योंकी संघटना नहीं है। कामकी संघटना है। सर्वोदयका दफ्तर वह रखेगी, सर्वोदय-मेलोंका आयोजन वह करेगी, चरखा संघ, ग्रामोद्योग संघ, तालीमी संघ आदि संघोंके कामोंका संयोजन करेगी। साहित्य प्रकाशन करेगी और दूसरा बहुत सारा काम करेगी। अुसके पास भी, सिवा सेवाके, और कोअी सत्ता नहीं रहेगी और वह किसी राजकीय पक्षसे जुड़ी हुअी नहीं होगी। यह मेरी अुसके विषयमें कल्पना है।

(हरिजनसेवक, १७-६-'५०) - विनोबा

सर्वोदय मंडल

किसी भाअीने नीचेका पत्र श्री काकासाहब कालेलकरको लिखा था। अुसे अुन्होंने मेरे पास यह लिखकर भेज दिया कि अुसके सम्बन्धमें मैं 'हरिजन' में अपने विचार जाहिर करूं :

"आपके विचारके लिअे और यदि योग्य दिखाअी दे तो किसी योग्य जगह पर भेजनेके लिअे मैं यह सुझाव पेश करता हूं। अिसकी प्रेरणा मुझे रॉटरी क्लबसे हुअी है। मेरा यह सुझाव है कि हम हिन्दुस्तानमें अेक सर्वोदय क्लब या मंडलकी स्थापना करें। अुसका मुख्य अुद्देश्य यह हो कि जिन आदर्शोंका गांधीजीने सारी जिन्दगी पोषण किया और जिनके लिअे अपना बलिदान दिया, अुनका समय-समय पर सभाअें करके प्रचार किया जाय। अिन सभाओंमें अिन आदर्शों पर व्याख्यान देनेके लिअे महत्त्वके व्यक्तियोंको बुलाया जाय। अिस मंडलमें जातपांत, रंग, धर्म, देश वगैराके भेद-भाव बगैर सबको सदस्य बननेकी स्वतंत्रता रहे। अुसका ध्येय 'मानव-समाजकी सेवा तथा शान्ति और अहिंसाके आदर्शोंका प्रचार' करना हो। अुसका मासिक चन्दा बराय नाम — अेक या दो रुपये — रखा जाय और हर केन्द्रके सभी जिम्मेदार व्यक्तियोंसे अुसके सदस्य बननेके लिअे अनुरोध किया जाय। रॉटरी क्लब और सर्वोदय क्लब या मंडलके बीच खास फर्क यह होगा कि रॉटरी क्लब खास तौरसे पाश्चात्य दृष्टिकोण पर स्थापित किया गया है; जब कि सर्वोदय मंडलका आधार आवश्यक रूपमें भारतीय संस्कृति और परंपरा पर होगा, क्योंकि आजकी दुनियाका मार्गदर्शन करनेके लिअे भारतीय संस्कृति और परंपराकी बहुत

ही जरूरत है। अिस मंडलके बढ़ने पर अुसके जिले और प्रान्तवार हिस्से कर दिये जायं और रॉटरी क्लबके मुआफिक अुसके भी गवर्नरोंका चुनाव किया जाय। मैं कल्पना करता हूं कि कुछ ही समयमें यह मंडल अखिल भारतीय मंडल ही नहीं, बल्कि आन्तर-राष्ट्रीय अखिल विश्वमंडल बन जायगा ' और अुस रूपमें वह आजकी पीड़ित दुनियामें शान्ति स्थापित करनेमें किसी भी दूसरी अकेली संस्थासे ज्यादा हाथ बंटा सकेगा।"

हमें यह समझ लेना चाहिये कि रॉटरी क्लब जैसी संस्थाओं और सर्वोदय या गांधी-विचारवाली संस्थाओंमें अेक महत्त्वका अन्तर है। भाषण, स्वाध्याय, चर्चा, कथा-वार्ता, नाटक, गीत, गांधीजीके अुपयोगमें आनेवाली चीजोंका प्रदर्शन वगैरा बातोंका विचारोंके प्रचारमें स्थान तो है, लेकिन हमें यह भी ध्यान रखना चाहिये कि सर्वोदय या गांधी-विचारकी समाज-रचना और अर्थ-व्यवस्थाकी स्थापनामें अिसका स्थान गौण या दुय्यम है। यदि ये बातें पहला स्थान ले लें, तो कोअी दिखावटी मजलिस तो बन सकती है, लेकिन अुनमें सर्वोदयका प्रचार नहीं हो सकता। सर्वोदय क्लब या मंडलकी स्थापना तो नीचे लिखे सामूहिक कार्यक्रमके जरिये ही की जा सकती है:

१. कार्यक्रमका अेक अंग यह होना चाहिये कि हरअेक सदस्य अपने हाथसे अैसी कोअी चीज पैदा करे, जो समाजके लिअे लाभदायक हो;

२. दूसरा अेक अंग अैसा होना चाहिये कि जिसमें आस-पासकी सफाअी और समाजके जीवनको सुधारनेका काम हो;

३. यह काम अैसा होना चाहिये कि जिसे गरीब और बेकार व्यक्ति भी कर सकें, और अुसके जरिये स्वाभिमानके साथ अपनी मदद कर सकें;

४. अिसका चन्दा अैसी किसी चीजके रूपमें होना चाहिये, जो सदस्योंने खुद पैदा की हो।

अिस तरहसे नियमित रूपसे सामूहिक कताअी और सफाअीके द्वारा ही हिन्दुस्तानमें सर्वोदय मंडलकी स्थापना हो सकती है। अिसके वगैर तो गांधीजीके आदर्शोंका प्रचार करनेवाले सर्वोदय मंडलकी मैं कल्पना तक नहीं कर सकता।

यदि यह कार्यक्रम आकर्षक न मालूम होता हो, तो सर्वोदय मंडलके नामसे खुली हुअी संस्था सिर्फ वहस या वड़े आदमियोंके आमोद-प्रमोदका स्थान भर वनकर रह जायगी। और चूंकि अुसकी चर्चाका दायरा 'गांधीवाद' और 'भारतीय संस्कृति और परंपरा' तक ही सीमित होगा, अिसलिअे यह संस्था रॉटरी क्लवसे छोटी मालूम होगी। वह रॉटरी क्लवकी वरावरी कभी नहीं कर सकती। रॉटरी क्लवसे सर्वोदय मंडलकी प्रेरणा लेनेके वजाय मैं पाठकों और अिन पत्र लिखनेवाले भाअीको सलाह देता हूं कि वे नवजीवन कार्यालय, अहमदावाद, द्वारा प्रकाशित रिचार्ड वी० ग्रेगकी पुस्तक 'अे डिसिप्लिन फॉर नॉन व्हायोलेन्स' (अहिंसाकी तालीम) के आधार पर अुसके चित्रकी कल्पना करें। रॉटरी क्लव सर्वोदय मंडलके लिअे आदर्श नहीं हो सकता।

अिसके अलावा, अिन पत्रलेखक तथा अुन्हीं जैसे विचार रखनेवाले दूसरे सव लोगोंसे मेरी प्रार्थना है कि वे 'भारतीय संस्कृति और परंपरा' के लिअे झूठा अभिमान रखनेका संस्कार तथा पश्चिमकी संस्कृति और पूर्वकी संस्कृतिके वीच (अधिकतर) झूठा फर्क खोजनेकी आदत छोड़ दें। मुझे खुदको तो यह समझमें ही नहीं आता कि कहांसे पूर्व शुरू होता है और कहां पश्चिमका अन्त होता है; साथ ही पूर्वकी संस्कृतिके जिन श्रेष्ठ गुणोंकी हम अपने मुंहसे तारीफ करते हैं, वे हमारे जीवनके किस भागमें प्रगट होते हैं। गांधीजीकी हत्या करनेवालेकी यह प्रामाणिक धारणा मालूम होती है कि गांधीजी जैसे क्वचित् पैदा होनेवाले सत्पुरुषको मार डालनेकी हिम्मत और प्रेरणा अुसे 'गीता' से मिली! क्या पूर्वकी संस्कृतिके अिस नमूने पर हम गर्व कर सकेंगे? या पिछले दो वरसोंमें देशके जुदा-जुदा भागोंमें हिन्दू, मुसलमान और सिक्खोंने आपसमें जो हत्यायें कीं तथा

औरतें भगाने और आग लगानेके कुकर्म किये, अुन्हें क्या हम वेद, कुरान तथा गुरुओंकी ओरसे मिली हुअी संस्कृतिके योग्य अुदाहरणोंके रूपमें पेश करेंगे? या क्या हम छुआछूतके कलंकको, अूंची और नीची जातियोंके भेदोंको और प्रान्तों, सम्प्रदायों तथा भाषाओंसे सम्बन्ध रखनेवाले झगड़ोंको अपनी अूंची संस्कृतिका अुत्तराधिकार कहेंगे? ये चीजें हमारे खूनमें बहुत गहरी पैठ गअी हैं। क्या अिसी सांस्कृतिक विरासतको हम फिरसे जिन्दा करेंगे और बढ़ायेंगे? हमारी झूठी आत्मश्लाघा हमें अिन्हीं नतीजोंकी तरफ ले जा सकती है। अगर हम सही दिशामें अुन्नति करना चाहते हैं, तो हमें अिस संस्कृतिके झूठे अभिमानको छोड़कर नम्रतासे यह मानना होगा कि हमारे धर्मग्रन्थ और कुछ महापुरुष अुदात्त विचारोंकी कितनी ही बड़ी अूंचाअी तक क्यों न पहुंचे हों, लेकिन हमारा सामाजिक जीवन और आम जनता ज्ञान और संस्कृतिकी दृष्टिसे बहुत नीचे गिरे हुअे हैं; संस्कृतिके रास्ते पर अभी हमें बहुत आगे बढ़ना है। साथ ही हमें यह भी मानना होगा कि दूसरे देशोंकी आम जनता संस्कृतिमें हमसे बहुत आगे बढ़ी हुअी है, और अुस दिशामें हमें नम्रतासे अुनसे बहुत कुछ सीखना होगा।

सारा मानव समाज अेक ही है। और सारी दुनियामें अुसने सिर्फ दो ही प्रकारकी संस्कृतियोंका विकास किया है: अेक आसुरी — सत्ता, शान-शौकत और आराम खोजनेवाली; और दूसरी सन्तोंकी — अुदात्त गुणों, सादगी और श्रमसे प्रेम करनेवाली। हमारे देशकी तरह ही हर देशमें दोनोंके अुपासक हैं। गांधीजी सन्त संस्कृतिके प्रतिनिधि थे। अिस संस्कृतिके अुदाहरण यदि हम भूतकालमें खोजें, तो सभी देशमें मिल सकते हैं; अुसी तरह यदि वर्तमान कालमें देखें तो हर देशमें हमें अैसे साथी और मित्र मिल सकते हैं। आसुरी संस्कृतिमें ही देश, जाति, और सम्प्रदायके भेद रहते हैं। सन्त संस्कृतिमें नहीं। मेरी कल्पनाका सर्वोदय मंडल अैसा नहीं हो सकता, जो किसी खास देशकी संस्कृतिको ही बहुत अूंची मानता हो।

(हरिजनसेवक, १०-७-'४९) कि० घ० मशरूवाला

सर्वोदयका तात्पर्य*

सर्वोदय अेक अैसा अर्थघन शब्द है कि अुसका जितना अधिक चिंतन और प्रयोग हम करेंगे, अुतना ही अधिक अर्थ अुसमें से पाते जायंगे। सभी अर्थ अेकदम सूझनेवाला नहीं है, आहिस्ता आहिस्ता सूझेगा। लेकिन अुसका अेक अर्थ स्पष्ट है कि जब भगवानने मानव-समाजका अिस दुनियामें निर्माण किया है, तो मानवका आपस-आपसमें विरोध हो या अेकका हित दूसरेके हितके विरोधमें हो, यह अुसकी मंशा कदापि नहीं हो सकती। कोअी बाप यह नहीं चाहता कि अेक लड़केका हित दूसरेके हितके विरोधमें हो। लड़कोंमें विचार-भेद हो सकता है, लेकिन हित-विरोध नहीं हो सकता। भिन्न-भिन्न विचार हों, तो अैसे अनेक विचार मिलकर अेक पूर्ण विचार बन सकता है। क्योंकि किसी अेक ही आदमीको पूर्ण विचार सूझे यह नहीं हो सकता। अेकको अेक अंग सूझेगा, दूसरेको दूसरा, तो तीसरेको तीसरा। और अिस तरह सबके अंगोंको मिलाकर अेक पूर्ण विचार होगा। अिसलिअे विचार-भेद होना जरूरी है। अुसमें दोष नहीं, बल्कि गुण ही है। लेकिन हित-विरोध नहीं होना चाहिये।

लेकिन हमने अपना जीवन अैसा बनाया है कि अेकके हितसे दूसरेके हितका विरोध पैदा होता है। धन आदि जिन चीजोंको हम लाभ-दायी मानते हैं, अुनका सामनेवालेकी परवाह किये बगैर और कभी-कभी अुससे छीनकर भी हम संग्रह करते हैं। हमने धनको यानी स्वर्णको प्रेमसे अधिक कीमत दे रखी है। अैसी स्वर्णमाया दुनियामें फैल गअी है। यह अुसीका नतीजा है कि जो परस्पर मेल या समन्वय आसान होना चाहिये

---

* सर्वोदय सम्मेलन, राअूकी ता० ८-३-'४९ की प्रार्थना-सभामें दिये गये भाषणसे।

था, वह मुश्किल हो गया है। अुस मेलकी शोधमें कअी राजकीय, सामाजिक और आर्थिक शास्त्र बन गये हैं। फिर भी सबका हित नहीं सध रहा है। लेकिन अेक सादी बात हम समझ लेंगे तो वह सधेगा। हरअेक दूसरेकी फिक्र रखे, साथ ही अपनी फिक्र अैसी न रखे कि जिससे दूसरेको तकलीफ हो। यही वह सादी बात है। यही कुटुम्बमें होता भी है। कुटुम्बका यह न्याय समाज पर लागू करना कठिन नहीं, बल्कि आसान होना चाहिये। अिसीको सर्वोदय कहते हैं।

सर्वोदयका यह अेक बहुत ही सरल और स्पष्ट अर्थ है। हम जैसे-जैसे प्रयोग करते जायंगे, वैसे-वैसे अुसके और भी अर्थ निकलेंगे। लेकिन यह अुसका कमसे कम और स्पष्ट अर्थ है। और अुसीसे यह प्रेरणा मिलती है कि हमें दूसरेकी कमाअीका नहीं खाना चाहिये, हमारा भार दूसरे पर नहीं डालना चाहिये। हमें अपनी कमाअीका तो खाना चाहिये, लेकिन यदि हम दूसरेका धन किसी तरहसे ले लें, तो अुसे अपनी कमाअी नहीं कहा जा सकता। कमाअीका अर्थ है प्रत्यक्ष पैदाअिश। ये दो नियम हम अपना लें, तो सर्वोदय-समाजका प्रचार दुनियामें हो सकेगा।

(हरिजनसेवक, १७-४-'४९) विनोबा

परिशिष्ट- क

सर्वोदय–समाज

जो लोग गांधीजीके सिद्धांतोंमें विश्वास रखते हैं, वे अपना अेक भाअीचारा कायम करनेका निर्णय करते हैं।

१. नाम—अिस संगठनका नाम सर्वोदय-समाज होगा। (यहां सर्वोदयका अर्थ है "सबका कल्याण"; और समाज यानी "भाअीचारा"।)

२. अुद्देश्य—सत्य और अहिंसाकी नींव पर अेक अैसा समाज बनानेकी कोशिश करना, जिसमें जातपांत न हो, जिससे किसीको शोषण करनेका मौका न मिले, और जिसमें समूह और व्यक्ति दोनोंका सर्वांगीण विकास करनेका पूरा मौका मिले।

३. बुनियादी सिद्धान्त—साधनों और साध्यकी शुद्धि पर जोर देना।

४. कार्यक्रम—अिस अुद्देश्यकी सिद्धिके लिअे नीचेके कार्यक्रम पर अमल किया जाय:

१. साम्प्रदायिक अेकता (अलग-अलग धर्मों और सम्प्रदायोंको माननेवालोंमें मेल)

२. अस्पृश्यता-निवारण

३. जातिभेद-निराकरण

४. नशाबन्दी

५. खादी और दूसरे ग्रामोद्योग

६. ग्राम-सफाअी

७. नअी तालीम

८. स्त्रियोंके लिअे पुरुषोंके बराबरीके हक और समाजमें स्त्री-पुरुषकी बराबरीकी प्रतिष्ठा।

९. आरोग्य और स्वच्छता
१०. देशकी भाषाओंका विकास
११. प्रान्तीय संकीर्णताका निवारण
१२. आर्थिक समानता
१३. खेतीकी अुन्नति
१४. मजदूर-संगठन
१५. आदिम जातियोंकी सेवा
१६. विद्यार्थी-संगठन
१७. कुष्ठ-रोगियोंकी सेवा
१८. संकट-निवारण और दुखियोंकी सेवा
१९. गोसेवा
२०. प्राकृतिक चिकित्सा
२१. अिसी तरहके दूसरे काम

ये काम खास करके भारतके लिअे हैं। अलग-अलग देशोंके लिअे स्थानीय परिस्थितियोंके अनुसार कार्यक्रम बनाया जा सकता है।

५. सदस्यता—जो कोअी अूपर लिखे हुअे सिद्धांतों और साधनोंको मानता है और अुनके अनुसार काम करनेकी कोशिश करता है, वह सेवक अिस समाजमें शामिल हो सकता है। अपना नाम और पता मंत्रीको भेजने पर अुनका नाम सदस्यके तौर पर सर्वोदय समाजके रजिस्टरमें दर्ज कर लिया जायगा।

६. सर्वोदय दिन — सर्वोदयके आदर्शोंका प्रचार करनेके लिअे ३० जनवरी (गांधीजीका निर्वाण-दिन) का दिन सब जगह सर्वोदय दिनके रूपमें मनाया जायगा।

७. सर्वोदय मेले — १२ फरवरीके दिन अैसी जगहों पर मेलोंकी व्यवस्था की जायगी, जहां गांधीजीके भस्मका विसर्जन किया गया था।

८. सर्वोदय सम्मेलन — सेवकोंका आपसमें संपर्क वनायें रखनें और विचारोंके आदान-प्रदानके लिअे अप्रैलके राष्ट्रीय सप्ताहके दिनोंमें वार्षिक सम्मेलन हुआ करेगा।

९. स्वरूप — अिस समाजका स्वरूप सलाह देनेवाली संस्थाका होगा, हुकूमत करनेवाली संस्थाका नहीं।

१०. समिति — सर्वोदय समाजका काम करने और वढ़ानेके लिअे सर्व-सेवा-संघ द्वारा अेक अुपसमिति नियुक्त की गअी है। अिस समितिका काम समाजके सदस्योंका रजिस्टर रखना और आम तौर पर समाज और अुसके सदस्योंके वीच संपर्क वनाये रखना होगा। खास तौर पर अिसका काम सर्वोदय समाजकी रचनासे सम्वन्ध रखनेवाले सम्मेलनके प्रस्ताव पर अमल करना होगा।

गोपुरी, वर्धा (भारत) मंत्री

सदस्यताका आवेदनपत्र

मंत्री,
सर्वोदय समाज
गोपुरी, वर्धा (भारत)

प्रिय वन्धु,

मैं सर्वोदय समाजके अुद्देश्य और वुनियादी सिद्धांतको स्वीकार करता हूं और अुनके अनुसार काम करनेकी कोशिश करता हूं। मेरी आपसे प्रार्थना है कि आप मुझे समाजका सदस्य वनाकर रजिस्टरमें मेरा नाम दर्ज कर लें।

पूरा नाम...................

पता.....................

मेरे कामकी तफसील पीछे दी गअी है।

ता० आपका

परिशिष्ट – ख

स्पष्टीकरण

सर्वोदय समाज और अुसके साहित्यके बारेमें लगातार पूछताछ की जाती है। समाजके साधारण विधानके अलावा अिस समय समाजसे सम्बन्ध रखनेवाला कोअी खास साहित्य नहीं है। बेशक, रचनात्मक कार्यक्रमके विभिन्न अंगों पर लिखा हुआ गांधीवादी साहित्य पढ़नेसे सर्वोदय समाजके सारे सदस्योंको लाभ हो सकता है। यह भी साफ कर देना जरूरी है कि सीधे किसी रचनात्मक कामका संगठन करना समाजका ध्येय नहीं है। सर्वोदय समाज शब्दके चालू अर्थमें कोअी संगठन नहीं है; यह अुन सब लोगोंका गांधीवादी भाअीचारा है, जो सत्य और अहिंसाके बुनियादी सि[illegible]ोंमें श्रद्धा रखते हैं। जो कोअी अिन सिद्धान्तोंमें श्रद्धा रखता है और न्याय[illegible]ों तथा साधनकी शुद्धिका आग्रह रखता है, वह अिस भाअी-चारे या समा[illegible]का सदस्य हो सकता है। अुससे यह आशा रखी जाती है कि वह लोगोंमें [illegible]को बढ़ानेके लिअे तथा अुनके शारीरिक, बौद्धिक, नैतिक और आर्थिक स्त[illegible]को अूंचा अुठानेके लिअे सेवाके कार्य करेगा। विधानमें जिन रचनात्मक प्रवृ[illegible]योंका अुल्लेख किया गया है, वे कामकी दिशा बतानेके लिअे अुदाहर[illegible]र पर दी गअी हैं। जरूरतके मुताबिक अुनमें दूसरी प्रवृत्तियां [illegible]ी जोड़ी जा सकती हैं। यह जरूरी नहीं है कि समाजका कोअी सेवक स[illegible]मितिके आदेशों और मार्गदर्शनके अनुसार ही अपना काम शुरू करे और [illegible]लाह तथा अुसके मिलने तक प्रतीक्षा करता रहे। जरूरत पड़ने पर समि[illegible] अुसे रास्ता दिखानेकी कोशिश करेगी। लेकिन समितिकी मददके बिना भी वह अपनी निजी हैसियतमें और अपनी समझके मुताबिक लोगोंकी सेवा कर सकता है, और अैसा करते हुअे दूसरोंसे मदद ले सकता और अुन्हें मदद दे सकता है।

सर्वोदय समाज कोअी राजनैतिक या धार्मिक संस्था नहीं है। न अुसका किसी 'वाद' से ही सम्बन्ध है। जो कोअी अुसके अुद्देश्योंको स्वीकार करता है और अेकमात्र सत्य और अहिंसाके अनुसार जीवन वितानेमें हार्दिक विश्वास रखता है, वह अपनेको समाजका सेवक मान सकता है, भले अुसके राजनैतिक, आर्थिक और धार्मिक विचार या मत कुछ भी हों। कोअी भी अुसके अैसे सेवक होनेके दावेका विरोध नहीं कर सकता। समाजका सेवक होनेसे ही किसीको कोअी प्रतिष्ठा नहीं मिल जाती। केवल लगनपूर्वक की जानेवाली सेवा और निरन्तर किये जानेवाले सत्कार्यसे ही कोअी प्रतिष्ठा पानेकी आकांक्षा रख सकता है। फिर भी समाजका सेवक बननेकी प्रतिज्ञा लेनेसे प्राप्त होनेवाला सन्तोष तथा समाजके सिद्धांतोंके अनुसार अपना व्यक्तिगत जीवन ढालने और लोगोंकी सेवा करनेका निश्चय ही शक्ति प्रदान करनेवाला है। जो लोग मार्च १९४८ में सेवाग्राममें अिकट्ठे हुअे थे, अुन्हें लोगोंमें सेवाकी भावनाको बढ़ाने और नैतिक नियमोंमें लोगोंकी श्रद्धाको मजबूत बनानेके लिअे ही सर्वोदय समाज जैसा संगठन कायम करनेकी जरूरत महसूस हुअी थी।

भारतके बाहर रहनेवाले मित्रोंके लिअे यह साफ कर देना भी जरूरी है कि सर्वोदय समाज अिसी देश तक सीमित नहीं है। दुनियाके सारे देशोंके लिअे वह खुला है। सर्वोदय समाज अैसे किसी भी व्यक्तिका हार्दिक स्वागत करेगा, जो सत्य और अहिंसाके सिद्धांतोंमें श्रद्धा रखता है और अपनी शक्तिभर लोगोंकी सेवा करनेकी कोशिश करता है। विधानमें बताअी गअी रचनात्मक कार्यक्रमकी कुछ प्रवृत्तियां सिर्फ भारतके लिअे ही अनुकूल हैं। लेकिन अैसी दूसरी प्रवृत्तियां भी हैं, जिनका सारे देशोंमें अुपयोग करके फायदा अुठाया जा सकता है। अलबत्ता, अलग-अलग देशोंकी खास जरूरतों और परिस्थितियोंके अनुसार अुनके साथ रचनात्मक कार्यक्रमकी दूसरी प्रवृत्तियां भी जोड़ी जा सकती हैं।

---o---